

ओमसाति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 24

दिसम्बर - I - 2022



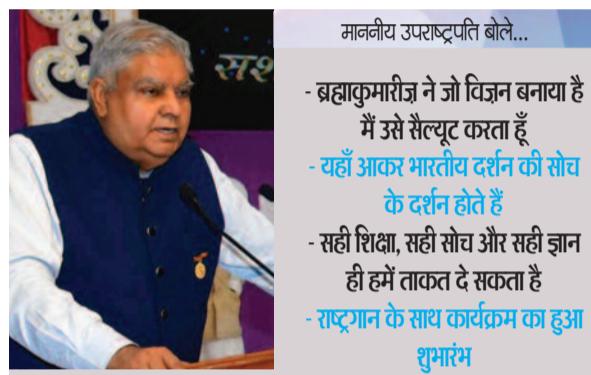
अंक - 17

माइट्रेट आखू

Rs. - 10

ब्रह्माकुमारीज़ के 85 वें वार्षिकोत्सव 'दीपावली' के मौके पर 'सशक्त, समृद्ध और स्वर्णम भारत की ओर' कार्यक्रम में पहुंचे भारत के उपराष्ट्रपति

ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिकता का एपीसेंटर : उपराष्ट्रपति धनखड़



माननीय उपराष्ट्रपति धनखड़...
- ब्रह्माकुमारीज़ ने जो विज्ञन बनाया है
मैं उसे सैल्यूट करता हूँ
- यहाँ आकर भारतीय दर्शन की सोच
के दर्शन होते हैं
- सही शिक्षा, सही सोच और सही ज्ञान
ही हमें ताकत दे सकता है
- राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का हुआ
शुभारंभ



शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के 85 वें वार्षिकोत्सव और दीपावली स्नेह मिलन समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ एवं श्रीमति डॉ. सुदेश धनखड़ ने विशेष रूप से शिरकत की। 'सशक्त, समृद्ध और स्वर्णम भारत' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जो विश्व के कल्याण की बात कर रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से एक दिन निश्चित रूप से विश्व गुरु बनेगा।

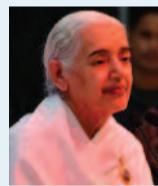
दुनिया के सबसे बड़े संकट में भी
गूल्य नहीं खोए

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े संकट कोरोनाकाल में भी भारत ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों का आवश्यकता है। कम शब्दों में यहाँ जो बताया गया है, वह गीता का सार है।

ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिक धरोहर का

एपीसेंटर है। यहाँ से सारे विश्व को

अध्यात्म का प्रकाश मिलेगा।



हमारी नई शिक्षा नीति संस्कृति पर
आधारित

उन्होंने कहा कि मैंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति

का गहन अध्ययन किया है और मुझे

यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इस नीति

ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका व लंदन स्थित सेवाकेंद्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि भारत की संस्कृति और त्योहार आज विश्वव्यापी हो गए हैं। राजयोग दुनिया के लिए भारत की सोगत है। इससे ही मानवता के उत्थान का मार्ग प्रशस्त होगा। आज भारतीय त्योहार जैसे कि दीपावली सभी द्वारा मैं बड़े प्यार से मनाते हैं। ये मानवता के

उत्थान के प्रतीकात्मक विजयोत्सव के रूप में मनाया जाता है। दानवी वृत्ति पर दैवी वृत्ति की विजय का यादगार है ये दीपावली पर्व। हम सभी मैडिटेशन के द्वारा आत्मदीप जगाते हैं। और परमात्मा के द्वारा सिखाया गया राजयोग पुनः भारत को विश्व गुरु बनायेगा।

हमारी संस्कृति, विचारों और विरासत को पटल पर रखकर इसका निर्माण किया है। देश नई दिशा में जाएगा क्योंकि

शिक्षा मूल है। धर्म हमारी धरोहर और पूँजी है। अध्यात्म, धर्म यूनिवर्सल है।

जिसका प्रचार-प्रसार करने का कार्य

ब्रह्माकुमारीज़ कर रहा है। मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि राजस्थान के श्रमसंघी सुखराम विनोद भी इस मौके पर उपस्थित थे। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई, संस्थान के कार्यकारी सचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय भाई व मल्टीमीडिया चीफ ब्र.कु. करुणा भाई ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस संस्थान का उद्देश्य लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना है।

इलाकियां

इंदौर से आई दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की कुमारियों ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुति

मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने गीत प्रस्तुत कर किया स्वागत

केक काटकर और कैंडल लाइटिंग कर मनाई दीपावली की खुशियां

कमिशनर, जिला कलेक्टर डॉ. भंवरलाल, एसपी ममता गुप्ता सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

'गीता वृत्तां की पुनरावृत्ति' विषय पर आयोजित हुआ कार्यक्रम 'गीता' फल की इच्छा बिना सिखाती कर्म करना : चौहान

- सुख शांति भवन में नवनिर्मित अनुभूति सभागार का हुआ उद्घाटन
- भारत पूरी दुनिया को शाश्वत शांति के मार्ग पर करेगा मार्गदर्शन : मुख्यमंत्री
- सभी को सुख और शांति का अनुभव कराएगा ये भवन : ब्र.कु. जयंती दीदी



गोपाल-म.प्र. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि गीता का संदेश है कि अत्याचार और अन्याय करने वालों को सजा धर्म ही देता है। गीता हमें फल की इच्छा किए बिना कर्म करना सिखाती है। लोगों को लगातार अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करना जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इस दिशा में किया जा रहा कार्य प्रशंसनीय है। हमारा भारत पूरे विश्व को शाश्वत शांति के

भाव रखता है, वो प्रभु को प्रिय होता है। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षा मनुष्य को गीता ज्ञान प्राप्त कर जीवन को सुखमय बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि भोपाल के इतिहास में इस सभागार का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। यहाँ आने के बाद सभी को सुख और शांति का अनुभव होगा। यहाँ से निकलने वाली ऊर्जा के सकारात्मक संदर्भ लोगों के जीवन की दशा और दिशा को बदलने में कागर साबित होते हैं। इस मौके पर 'गीता वृत्तां की पुनरावृत्ति' संगोष्ठी का भी आयोजन हुआ। विश्वास सारंग, चिकित्सा शिक्षा मंत्री, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास सरकार, मध्यप्रदेश, विधायक, नरेला, भोपाल, विधानसभा के पूर्व प्रोटर्म अध्यक्ष और विधायक रामेश्वर शर्मा और ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि दीपावली सत्युगी स्वर्णम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है, लेकिन सच्ची दिवाली तो आत्मदीप जगाने से होगी। दशहरे के बाद दिवाली

अज्ञान अंधकार खत्म कर ज्ञान का दीप जगाने का महापर्व 'दीपावली'



ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के भोपालकाली स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में रोशनी का पावन पर्व दीपावली बड़ी धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम में दिल्ली एवं एन.सी.आर के 3000 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की। दीप प्रज्ञलित कर सभी ने स्वर्ण को ज्ञान की रोशनी से रोशन कर बुराइयों से मुक्ति का संकल्प लिया।

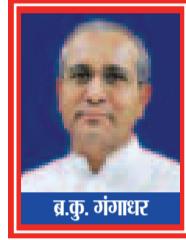
संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि दीपावली सत्युगी स्वर्णम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है, लेकिन सच्ची दिवाली तो आत्मदीप जगाने से होगी। ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि ज्ञान अंधकार खत्म कर ज्ञान का दीप जगाने का पुनरावृत्ति का लॉन्चिंग हुई। गायक बृजेश मिश्रा एवं ब्र.कु. रीना ने सुंदर गीत प्रस्तुत किये। ब्र.कु. आशा एवं अन्य कलाकारों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति हो गई। संस्था के आयोजित महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि दीपावली सत्युगी स्वर्णम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है, लेकिन सच्ची दिवाली तो आत्मदीप जगाने से होगी। ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि

कार्यक्रम में...

संस्था के द्वारा दिवाली के नए गीत की लॉन्चिंग हुई। गायक बृजेश मिश्रा एवं ब्र.कु. रीना ने सुंदर गीत प्रस्तुत किये। ब्र.कु. आशा एवं अन्य कलाकारों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति हो गई। संस्था के आयोजित महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि दीपावली सत्युगी स्वर्णम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है, लेकिन सच्ची दिवाली तो आत्मदीप जगाने से होगी। ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि दीपावली के नए गीत की लॉन्चिंग हुई। गायक बृजेश मिश्रा एवं ब्र.कु. रीना ने सुंदर गीत प्रस्तुत किये। ब्र.कु. आशा एवं अन्य कलाकारों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति हो गई। संस्था के आयोजित महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि दीपावली सत्युगी स्वर्णम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है, लेकिन सच्ची दिवाली तो आत्मदीप जगाने से होगी। ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि दीपावली के नए गीत की लॉन्चिंग हुई। गायक बृजेश मिश्रा एवं ब्र.कु. रीना ने सुंदर गीत प्रस्तुत किये। ब्र.कु. आशा एवं अन्य कलाकारों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति हो गई। संस्था के आयोजित महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि दीपावली सत्युगी स्वर्णम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है, लेकिन सच्ची दिवाली तो आत्मदीप जगाने से होगी। ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि दीपावली के नए गीत की लॉन्चिंग हुई। गायक बृजेश मिश्रा एवं ब्र.कु. रीना ने सुंदर गीत प्रस्तुत किये। ब्र.कु. आशा एवं अन्य कलाकारों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति हो गई। संस्था के आयोजित महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि दीपावली सत्युगी स्वर्णम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है, लेकिन सच्ची दिवाली तो आत

अपने अंदर की खूबियों को न भूलें

वैसे तो सिक्के के दो पहलू होते हैं। यही कहावत भी है। लेकिन कुछ लोगों के कई पहलू होते हैं। उन्हें हम महापुरुष कहते हैं। हमारे जीवन में कई लोग ऐसे होंगे जिनके आने के बाद खुशहाली आती है, प्रगति आती है। ऐसा ही एक महापुरुष हमारे भीतर भी होता है जिसे हम पहचान नहीं पाते। जितना हम अपने भीतर के महापुरुष से अनभिज्ञ रहेंगे उतना ही बाहर ढूँढ़ते रहेंगे। ग्रीक पौराणिक कथाओं में एक राजा मिडास की चर्चा है। वो किसी भी चीज़ को छू लेता था तो वो सोने में बदल जाती थी। ठीक ऐसा ही 'मिडास टच' हमारे भीतर है। हम प्रयास करें कि पहले तो अपने ही जीवन को श्रेष्ठ बनायें। परमात्मा जन्म से सबको गजब की खूबी देता है। कुछ लोगों की खूबी उनके माता-पिता, लालन-पालन करने वाले, पढ़ाने-लिखाने वाले, उनके साथ जीवन जीने वाले लोग निखार देते हैं। उसके बाद मनुष्य खुद अपनी खूबियों को निखारता है। जब-जब आप बाहर से कुछ ले रहे हों, तब-तब ये न भूलें कि वही खूबी आपके भीतर है। उसको भी स्पर्श करते रहिये। हम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि हमें परमात्म-प्रदत्त खूबियां जो मिली हैं उन्हें हमने जाना भी है और पहचाना भी है। इतना तक ही नहीं, लेकिन उन्हें किस तरह से उपयोग, प्रयोग करना है, ये विधि भी हम जान गये हैं। जैसे कि परमात्मा ने हमें बताया कि मेरा और आपका सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ, पिता-पुत्र का है। यानी कि हम पिता के वर्से के अधिकारी हैं। जो भी उनकी जायदाद है, शक्तियां हैं, मिलिक्यत है, उनके हम कहदार हैं। दूसरे शब्दों में कहें, तो पिता के पास जो भी है वो उसके बच्चे का मान हमारा है।



ब्र.कृ. गंगाधर

दूसरे शब्दों में कह, तो पिता के पास जो भी है वो उसके बच्चे का, माना हमारा है। जरा सोचें कि पिता के पास क्या-क्या है, तो बहुत लम्बी लिस्ट हमारे मन-मस्तिष्क में उभर आती है। वो शक्तियों का सामग्र है, ज्ञान का भंडार है, सबको सही राह दिखाने वाला है, बिगड़ी को बनाने वाला है, वो मेरा है, मेरे लिए है आदि-आदि। जब हम इस तरह से अपनी स्मृतियों को तरोताजा करते हैं तो एहसास होता है कि परमात्मा ने जब मुझे भेजा तो खाली हाथ नहीं भेजा, बल्कि मुझमें सारी खुबियाँ और शक्तियाँ भर कर भेजा। क्योंकि उसे पता था कि मृत्युलोक में कई सारी समस्याएं, कठिनाइयां, मुश्किलातें होंगी। उसे पार करने के लिए, विजयी होने के लिए उसने पहले ही सारे इंतजाम कर दिये। आज तक हम जो कुछ बाहर से प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं, इसका मतलब वो हमारे पास नहीं है, यही हुआ ना! जैसे कि मुझे गाड़ी लेनी है, क्योंकि मेरे पास नहीं है। पर अब हमें ये समझ आई कि परमात्मा ने हमें सब कुछ दिया है परंतु उसे न जानने के कारण हम बाहर से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। जो हमारे भीतर मौजूद है, उससे हम अनभिज्ञ रहे, परिणामखरूप उसे प्राप्त करने की बेचैनी हममें बनी रही।

पराणनस्त्रूप उस प्रत करन का बयन हमन जना रहा।
अब बात यह आती है कि अपने भीतर मौजूद जो महानताएं
हैं, योग्यताएं हैं, शक्तियां हैं, उसे बाहर कैसे निकाला जाये?
यहां हमें परमात्मा ने उसका सहज तरीका बताया कि जो-जो
आपके पास मौजूद है उसको स्मृति पटल पर लायें, उसका
चिंतन करें, स्वयं को निखारें और देखें कि मेरे पास सर्वशक्तियां
मौजूद हैं जिससे मैं आने वाली चुनौतियों को पार कर सकता
हूँ। मैं एक शक्तिशाली आत्मा हूँ, ये स्मृति लाने से ही हमें ये
बात याद आती कि मेरा पिता सर्वशक्तिवान है, तो मैं भी तो
वैसा ही होऊंगा ना ! जैसे शेर का बच्चा शेर जैसा शेर ही होगा
ना ! ऐसे वास्तविक और सुंदर चिंतन के साथ हमारी स्थिति
वैसी ही बन जाती है और हम अपने आप को शक्तिशाली
समझने लगते हैं, अर्थात् हमारे मन और बुद्धि में वो स्वीकार्य
हो जाता है कि मैं शक्तिशाली हूँ, मैं हर चीज कर सकता हूँ
और उन शक्तियों को सही विधि-विधान के तरीके से उपयोग
और प्रयोग कर सकता हूँ। इस तरह का चिंतन और दर्शन
बारंबार और नियमित रूप से करने से हमारे अंदर वो विश्वास
पैदा हो जाता है। हम कमज़ोर नहीं, हमारे पास ऐसा कोई कारण
नहीं जिसका हम निवारण न कर सकें।

दूसरी स्मृति ये भी हमारे पास है कि हम ज्ञान स्वरूप आत्मा हैं। क्योंकि ज्ञान सागर बापे के हम बच्चे हैं। ज्ञान के प्रकाश से हम हर चीज़ की जाँच कर सकते हैं, परख सकते हैं और उसे उचित कार्य में लगा सकते हैं। सही व सत्य निधि से किये गये कर्म का फल अवश्य ही सर्वश्रेष्ठ होता है। इसी तरह हमारे भीतर छुपे हुए स्वमान की स्मृतियां बारंबार हमें उमंग देती, उल्लास देती और खुशियां देती हैं। तो भीतर का महान पुरुष जग जाता है और हम दुनिया में महान कर्तव्य करने लग जाते हैं। महानता का मतलब, यहां जो आज संसार में व्याप समस्याओं के अंबार का अंधकार है, उसका निदान करने में हम सक्षम हैं। इसीलिए ऐसे स्व-चिंतन करके स्व में छिपे हुए पुरुषत्व को बाहर लाना है। इससे हमें बाहर से कुछ भी लैने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। और हम अंतर्मुखी, सदा सुखी की उक्ति को सार्थक कर पायेंगे। परमात्मा ने जो हमें खुबियां दी हैं, हम बखूबी उसका उपयोग कर सकें। वैश्विक समस्याओं के निदान के भगीरथ कार्य में हम परमात्मा के मददगार बन सकें। शर्त बस इतनी ही है कि हम न सिर्फ नित्य अपनी शक्तियों के साथ जुड़ें अपितु उसका एहसास भी करें। साथ-साथ परम शक्ति के सानिध्य का साथ हमेशा बनाये रखें।



संगम के एक-
एक सेकण्ड का
अटेन्शन हो



बाबा को हम सदैव अपने सामने संगम का समय है जिसमें हमारी लाते रहें, बाबा की मूर्ति में ही चढ़ती कला होती है। तो संगम समय पर राज्य अधिकारी बनने से निशानी यह है कि स्वयं अशरीरी भविष्य में भी राज्य अधिकार स्थिति में रहते थे। जब बाबा झोपड़ी निश्चित है ही फिर भक्तिकाल में में बैठते थे तो जब भी कोई बाबा पूज्य भी ज़रूर बनना ही है। भले द्वापर से गिरना शुरू करते हैं लेकिन हमारा पूज्य रूप तो कायम होता है। हम सब पूज्य जरूर बनने वाले हैं अशरीरीपन का अभ्यास लेकिन जैसे यहाँ पुरुषार्थ में नम्बर ऑटोमेटिकली हो जाता था। तो हैं वैसे पूज्य में भी नम्बर हैं। साकार बाबा के सामने जाने से ही किसी किसी, बड़े बड़े मन्दिरों में जो पूछना-कहना होता था वो रोज़ हर कर्म का यादगार पूज्य के एकदम भुला करके ऐसे साइलेंस में रूप में विधिपूर्वक पूजा जाता है। अशरीरी स्टेज पर ले जाता था। यह और कहीं-कहीं ऐसा नहीं होता है। प्रैक्टिकल अनुभव हम सभी ने मन्दिरों में भी फर्क है। यह सारा फर्क इस संगम समय के पुरुषार्थ और किया है।

तो ज्ञान, शक्तियां और गुण तो हैं ही हमारा खजाना लेकिन चौथा बाबा ने अटेन्शन दिलाया है- सबसे बड़ा खजाना है समय का। यह जो संगम का समय है- यह सबसे बड़ा खजाना है क्योंकि कोई भी प्राप्ति, कोई भी कर्म समय अनुसार ही होती है। सुबह से लेकर हमारी जो भी दिनचर्या चलती है वो समय के आधार पर चलती है। तो अगर समय के खजाने को सही रीति से विधिपूर्वक हम कार्य में लगाते हैं, तो हमारा सारे कल्प का भविष्य निश्चित हो ही जाता है क्योंकि यह संगम का समय, एक सेकण्ड ५ हजार वर्ष की प्रालब्ध का आधार है और कोई भी युग में हमारी प्रालब्ध नहीं बन सकती। यही प्राप्ति के ऊपर है। तो हमको देखना है कि सबसे बड़ा खजानों का आधार जो समय का खजाना है उसको हम कितना और कैसे यूज़ करते हैं? क्योंकि बाबा का है कि अब नहीं तो कब नहीं का पाठ पक्का करना है। एक सेकण्ड में कुछ भी हो सकता है, अचानक होगा तब तो माला में नम्बरवार होंगे। तो अचानक होना है, उसके कारण बाबा कहता है- संगम के एक-एक सेकण्ड का अटेन्शन हो। ऐसे ही साधारण रूप में इसे न गंवायें। ऐसे ही साधारण रीति से हमारा दिन बीता तो वहाँ भी साधारण ही बनना पड़ेगा। तो अपनी लगन में मगन और अपनी कर्माई जमा करने में मस्त रहें।

बाबा कहते बच्चे सदा आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमगा नहीं हो सकते। क्यों, क्या, कैसे... इन प्रश्नों में वे अपना माथा गर्म नहीं करेंगे। उनका दिमाग शीतल कुण्ड होगा क्योंकि हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता है। शीतल काया वाले योगी बन जाते हैं।

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफरत होंगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी गंवायेंगे। यूनिटी भी नहीं रह सकेगी। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड़वा खोदा हो, लेकिन आग तुम सच्चे हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा जरूर करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो - देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाला दुर्वासा नहीं हूँ। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तग करता- देखना इसकी क्या गति होगी! मैं क्यों बुरा सोचूँ! आग मैंने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

मैं और मेरापन की हदें बहुत
नुकसान करती हैं, अब इन हदों से
बाहर निकलो। जैसे बाबा बेहद का
है, ऐसे बेहद दिल वाले बनो।

लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं
मिलता, उसे मिलता मुझे क्यों नहीं
मिलता।

हमें बाबा ने श्रीमत दी है- बच्चे
क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी
लूनपानी(खारा पानी) नहीं होना। मैं
क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती!
अगर लूनपानी होते तो ब्रह्मकुमार-
कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम
है दूध चीनी होकर रहना। अगर मेरे

ब्रह्मा मुख से शिवबाबा ने जो सुनाया, वो अन्दर समाया हुआ है। वण्डर है बाबा का। तो दिल खोलके अन्दर देखते हैं, दिल में क्या है? जो बाबा ने सुनाया है, वही दिल में समाया हुआ है! वही फिर स्वरूप में मन हो शांत, तन हो शीतल, ऐसी दुनिया बनानी है। पहले तो तुम अपने को बनाओ ना। मन के कारण तन भी घड़ी-घड़ी हलचल में आ जाता है। तो माया बिल्ली है, उसका झूठा कभी नहीं खाना चाहिए।



☛ राजयोगिनी दादी जानकी जी

ब्रह्मा मुख से शिवबाबा ने जो सुनाया, वो अन्दर समाया हुआ है। वण्डर है बाबा का। तो दिल खोलके अन्दर देखते हैं, दिल में क्या है? जो बाबा ने सुनाया है, वही दिल में समाया हुआ है! वही फिर स्वरूप में मन हो शांत, तन हो शीतल, ऐसी दुनिया बनानी है। पहले तो तुम अपने को बनाओ ना। मन के कारण तन भी घड़ी-घड़ी हलचल में आ जाता है। तो माया बिल्ली है, उसका झूठा कभी नहीं खाना चाहिए।

लाना है। प्रैक्टिकल लाइफ में जितना वो यूज़ हो रहा है, उतना लगता है कल्प-कल्प के लिए यह नृंध हो रही है। कोई मुरली ऐसी नहीं है जिसमें बाबा कहे बच्चे मेरे को याद करो। तो पूर्व जन्मों के कर्मबन्धन फिर इस जन्म के बन्धन वो सब खलास करना है। किसके साथ भी हमारा कोई बधन नहीं है, बन्धनमुक्त। देह के सम्बन्ध से न्यारे बनने से सुख मिलता है इलाही। ऐसे ही सुख नहीं मिलता है। अगर देह के सम्बन्ध के बन्धन हैं तो दुःख ही दुःख है। मैं हर सेकण्ड में बाबा अपनी याद दिलाता है। ऐसा खींचने वाला है जो और कोई याद आता नहीं है। धीरज धर मनुआ, सुख के दिन आयेंगे। हर एक बात में बाबा याद है। इस गीत पर बाबा ने बहुत बार मुरली चलाई होगी। जो पिया के साथ है उसके लिए बरसात है... दूर देश का रहने वाला आया देश पराये। यह रावण का पराया देश है और बाबा को खास याद करना नहीं पड़ता है, पर बाबा की याद ऐसी है और कोई बात याद आती नहीं है।

अपने देह को भी बन्धन बनायेगी तो दुःख है इसलिए देह में होते भी जैसे मैं देह से न्यारा हूँ। देह में हूँ ही नहीं। आत्मा इस शरीर से अगर निकल जाये तो यह शरीर कोई काम का नहीं है। यह वण्डर है कि आत्मा कैसे गर्भ में आती है! कैसे निकलती है, क्या है? पहले अज्ञान है तो लाइफ कैसी है, अभी वही लाइफ ज्ञान में आने से बहुत अच्छी है। ज्ञान क्या है? शरीर भी मेरा नहीं है, शरीर में हूँ। सारे दिन में आत्मा कितने विचार करती है! अभी उसको समझके कन्नोल में रखना, फ्री रहना इससे मन शांत होगा। मन की शांति के लिए हमने कुछ दबाया नहीं है परन्तु शात रहना अपने को सिखाया है। जो बाबा ने मधुबन में किया कराया है वही सब करना है, बुद्धि में और कुछ प्लान नहीं है। जो भगवान का प्लान होगा उसी अनुसार करना है, चलना है। तो इसमें मैं अपना क्या प्लान करूँ या सोचूँ! जो भगवान का ड्रामा में बना हुआ है, उसी अनुसार बाबा चला रहा है, हम चल रहे हैं। तो याद क्या करें? पर ऐसे नहीं कोई अल्टा कर्म करता रहे। थोड़ा भी उल्टा करेंगे, गलतियां होंगी, तो पीछे सजायें नहीं मिलेंगी, अभी सजा मिलती है, बाबा के घर में पाँव टिकेगा नहीं। बाबा की यह रचना देख करके संगमयुग पर और क्या बात सुनाऊं, जहाँ बाप है वहाँ और कोई बात नहीं।

बिना शुभ भावना के रिस्पेक्ट रख नहीं सकते



बाबा कहते बच्चे सदा आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होंगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों, क्या, कैसे... इन प्रश्नों में वे अपना माथा गर्म नहीं करेंगे। उनका दिमाग शीतल कुण्ड होगा क्योंकि हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता है। शीतल काया वाले योगी बन जाते हैं।

गुणा दण्ड मिलेगा क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखें तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिसर्विस। आपस में नहीं बनती तो

राजयोगिनी बाबा प्रकाशमणि जी

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफरत होंगी तो यार भी गंवायेंगे, मान भी गंवायेंगे। यूनिटी भी नहीं रह सकेगी। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड़ा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा जरूर करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो - देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाला दुर्वासा नहीं हूँ। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तग करता- देखना इसकी क्या गति होगी! मैं क्यों बुरा सोचूँ! अगर मैंने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100

में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन- कारण है देह अभिमान। अगर मैं इस धन, बाबा की सेवा में लगाओ। दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ अपनी दिनचर्या को श्रीमत के तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी अनुसार चेक करो।
रुद्धि दे या रुद्धि दे रुद्धि दे

हा नहा। आयगा ता हवा का तरह
चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो
माना एकता में, यूनिटि में रहो।

और मेरापन की हँडे बहुत

इस्था के वश कभी भा किसा का
गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर
स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और
दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह
बहुत बड़ा पाप है।

न करती हैं, अब इन हदों से
निकलो। जैसे बाबा बेहद का
ऐसे बेहद दिल वाले बनो।



पढ़ाई छोड़ना माना लुला-लंगड़ा
बनना। मुरली में बाबा ने जो भी
श्रीमत दी है उसे पालन करना मेरा
स्वधर्म है। चेक करो मेरे में श्रीमत
पालन करने की कितनी शक्ति है?
मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अन्दर
है? मुझे श्रीमत है- तुम देहधारी की
आकर्षण में नहीं जाओ। अगर
आकर्षण होती है तो वह श्रीमत की
लकीर छोड़ता। उन्हें रावण ज़रूर

भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान
बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर
है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय
में बाबा की याद है। जिनके हृदय में
बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब
रत्न हैं। बाबा के सब फूल हैं। अगर
कहते यह मेरा स्टूडेंट है। बाबा के
कहने पर चल रहे हैं फिर तुम क्यों
कहती- यह मेरा स्टूडेंट तुम्हारे सेन्टर
पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो
ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते
हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने
वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे
बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हदों
में नहीं आओ। मैं और मेरापन की
हदें बहुत नुकसान करती हैं, अब इन
हदों से बाहर निकलो। जैसे बाबा
बेहद का है, ऐसे बेहद दिल वाले
बनो।

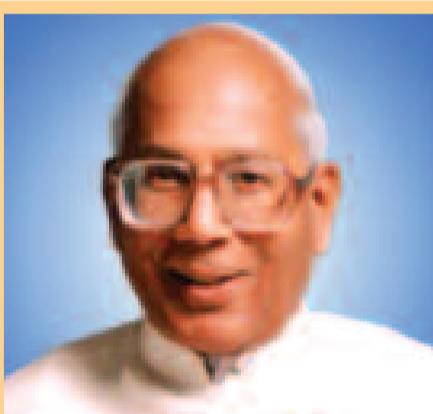
छोटी छोटी किन्तु...

देर करने की आदत है छोटी पट... करती है बड़ा नुकसान

हमारे व्यवहार या कर्म-व्यापार में कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम “छोटी-छोटी” बातें कह कर छला देते हैं। हम उन्हें सुधारने पर ध्यान ही नहीं देते क्योंकि उनके महत्व का हमें एहसास ही नहीं होता। किसी भी आदत के कारणों या परिणामों की गम्भीरता जाने बिना तो हम उसे ठीक करने का दृढ़ संकल्प करते ही नहीं और दृढ़ संकल्प न करने से वह आदत ठीक नहीं हो पाती। परंतु हमें सोचना चाहिए कि जिन्हें हम “छोटी-नी आदत” कहते हैं, वह वास्तव में छोटी नहीं होती; वह केवल ऊपर-ऊपर से या बाहर ही से छोटी दिखाई देती है।

उसके नीचे या भीतर तो कई अन्य त्याज्य (छोड़ने योग्य) आदतें छिपी होती हैं। जैसे हमें बताया जाता है कि ग्लेशियर (बर्फ की चट्टान) जल से ऊपर तो थोड़ा-सा ही दिखाई देता है परंतु नदी या “हिमनदी” में उसका पहाड़-जितना भाग तो अपने ही भार के कारण छिपा रहता है, वैसे ही ‘छोटी-सी आदतें’ भी बाहर से छोटी दिखाई देती हैं, उनके भीतर या नीचे तो पहाड़-जितना विशाल रूप छिपा होता है। कैसर रोग के बारे में भी यही बताया जाता है कि ऊपर तो छोटा-सा दाना ही दिखायी देता है परंतु उसके नीचे, शरीर के अंदर, उसकी जड़ें दूर-दूर तक फैली हुई होती हैं कि एक दिन वह सारे मनुष्य को ही दबोच लेता है। वह “दाना” “दाना” नहीं रहता बल्कि सारे शरीर को ही अपने लपेट में लेकर उसे विषेला, निकम्मा और पीड़ाजनक बना देता है।

उदाहरण के तौर पर देर करने ही की आदत को ले लीजिये। यदि किसी व्यक्ति को पाँच सौ व्यक्तियों के सामने भाषण करना हो अथवा सौ-दो सौ- व्यक्तियों के सामने भाषण करना हो और वहाँ देर से पहुँचे तो उसके इस अलबेलेपन के परिणाम स्वरूप सैकड़ों लोगों का समय व्यर्थ जायेगा। वे उसी के इंतजार में बैठे रहेंगे। हो सकता है उनका मन भी उड़िग्न (परेशान) हो उठेगा कि वक्ता व्यक्तियों नहीं आया है, यह तो ठीक आदत नहीं है। अतः उनका समय व्यर्थ करने के अतिरिक्त उनकी स्थिति को भी बिगाड़ने का निमित्त से अधिक बनना एक बड़ी भूल है। यदि ऐसी भूल करने वाला क्षमा नहीं मांगता तो एक से अधिक भूल करता है और यदि क्षमा मांगता है तब एक तो वह लोगों के ध्यान को और अधिक अपने दुर्घटना या अपनी परेशानी की ओर आकर्षित करके उनका और समय नष्ट करता है और यदि क्षमा मांगते हुए भी उसके मन में प्रायश्चित्त नहीं है अथवा भूल का गहरा एहसास नहीं है तो और



**॥ राजयोगी ब्र.कु.
जगदीशचन्द्र हसीजा ॥**

वहाँ नहीं पहुँच पाते और कार्य में विघ्न उपस्थित होता है। हरेक यात्री की अपनी समस्या होती है और गाड़ी के देर से पहुँचने के कारण उन्हें न जाने क्या-क्या परेशानी होती है और उनके मन पर क्या बोताती है।

यदि अस्पताल में डॉक्टर किसी ऐसे रोगी की ओर ध्यान देने में देर कर जिसका खून बह रहा हो या जिसे हृदय पीड़ा हो रही हो या जो चोट के दर्द से अत्यन्त दर्द की स्थिति में हो तो क्या परिणाम होगा? रोगी या घायल व्यक्ति के जीवन का प्रश्न होता है, ऑक्सीजन का सिलेण्डर दो मिनट देर से आने पर रोगी की मृत्यु हो सकती है। सोचिये कि देर किन्तु खतरनाक है!

किसी ऐसे व्यक्ति से पूछकर देखिये जिसके मकान को कभी आग लगी थी और बार-बार फोन करने पर अग्नि शामक दस्ता केवल पाँच

अधिक भूल करता है और यदि सचमुच में प्रायश्चित्त भाव है तो अपनी स्थिति को भी असंतुष्टा की स्थिति पर उसे लाना पड़ता है। फिर, इसके बाद भी यदि वह देर से पहुँचने की आदत बनाये रखता है, फिर तो आप सोच ही सकते हैं कि लोग भी उसके विषय में क्या सोचेंगे और वह भी अपने बारे में क्या सोचेंगे।

जब रेलगाड़ी देर से पहुँचती है तो कितने लोगों को हानि होती है। जिन्हें सम्बन्धित गाड़ी लेनी होती है, उनकी वह गाड़ी छूट जाती है और दूसरी गाड़ी में उनका स्तीपर बर्थै आरक्षित नहीं होता और सारा दिन स्टेशन पर बैठना या किसी होटल में थक्का खाना पड़ता है। खर्च भी होता, समय भी व्यर्थ होता है, आगे जहाँ पहुँचना हो

जायेगा।

विशेष तौर पर जो शिक्षक या शिक्षिकायें हैं, उन पर तो यह बात बहुत लागू होती है। यदि वे ही अपनी कक्षा में देर से पहुँचेंगे तो बच्चे उनसे क्या सीखेंगे? न केवल उनके प्राग्रामिक जीवन का वह अनमोल अध्ययन काल व्यर्थ जायेगा बल्कि उनके चरित्र में भी यह दोष आ जायेगा। परंतु केवल शिक्षक ही क्यों, हर व्यक्ति यदि अपना कार्य ठीक समय पर नहीं करेगा तो उसके परिणामस्वरूप अनेकानेक को हानि होगी और उसका भारी पाप उसके सिर पर लदेगा। हर कार्य को देर से करने की जो आदत पड़ जाती है, वह तो ‘महादोष’ है। उससे तो बहुत ही हानि होती है। “दिल्लम प्रसाद” बनकर कार्य करता है, वह जीवन में कितना कार्य कर पायेगा, वह तो मटक-मटक कर और अटक-अटक कर ही चलता होगा और किसी दरस्थ मंजिल पर तो जीवन भर भी नहीं पहुँच सकेगा। यदि चाँद पर जाने के लिये रोकीट न बनाये जाते तो अपनी चहलकदमी (धीरे-धीरे चलने की क्रिया) से, पद यात्रा से, बैलगाड़ी से या गधे और खच्चर की सवारी से क्या मनुष्य कभी चाँद पर पहुँच पाता?

इस प्रकार जिसका स्वभाव ही देर से कार्य करना हो जाता है, वह तो अपने आध्यात्मिक पुरुषार्थ में भी अपनी मंजिल पर ठीक समय पर नहीं पहुँच पाता अथवा अपने उच्च लक्ष्य को प्राप्त ही नहीं कर पाता। अतः विशेषकर आध्यात्मिक पुरुषार्थ में तो देर से कार्य करने की आदत की इतनी बड़ी हानि है जिसका हिसाब ही नहीं क्योंकि वह तो अपनी इस आदत के कारण हर संस्कार को बदलने में देर करेगा और इस प्रकार अपने पूरे संस्कार बदल ही नहीं पायेगा या संस्कारों को बदलने का कार्य पूरा ही नहीं कर पायेगा।



माउण्ट आबू। उत्तराखण्ड के ऋषिकेश में बालिका विकास व मानसिक स्वास्थ्य विषय पर हुए धर्म सम्मेलन में डॉ. ब्र.कु. बिनी सरीन को सम्मानित करते हुए उत्तराखण्ड के राज्यपाल गुरमीत सिंह एवं ग्लोबल इंटरफेश एलाइंस जीवा के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती महाराज।



मोहाली-पंजाब। बेवर्ली गोल्फ एवेन्यू में ‘आध्यात्मिकता द्वारा तनाव मुक्त जीवन’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. रमा दीदी को सम्मानित करते हुए मनमोहन, एम.डी., बेवर्ली गोल्फ एवेन्यू।



गया-सिविल लाइन(बिहार)। दीपावली के शुभ अवसर पर आयोजित श्री लक्ष्मी नारायण की चैतन्य झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. बिनोद कुमार केशरी, डॉ. भोला नाथ पांडेय एवं सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी।



गोराया-जलंधर(पंजाब)। दीपावली के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान अपने पूरे परिवार सहित आबकारी विभाग के ऑफिसर कुलविन्द्र सिंह, ब्र.कु. सीमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मालपुरा-जयपुर राजापार्क(राज.)। दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य समझाने के पश्चात् दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु.पूनम बहन एवं अन्य ब्र.कु. बहनें।



अयोध्या-उ.प्र। हिमांशु विक्रम सिंह इंस्टिट्यूट ट्रेनिंग के सभी शिक्षकों को ‘आदर्श शिक्षक’ विषय पर ब्र.कु. भगवान, माउण्ट आबू ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि बहन, मुख्य टीचर ट्रेनर डॉ. अनामिका मिश्रा, टीचर ट्रेनर रंजीत सिंह एवं अन्य सभी टीचर्स उपस्थित रहे।



लूधियाना-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस पर ब्रह्मकुमारीज द्वारा आत्म वल्लभ जैन कॉलेज हुमेन्युरा एवं पीसीटीई कॉलेज बहोवल में आयोजित शांति वार्ता में एक संसद कृत्य के माध्यम से शांति और आत्महत्या रोकथाम का संदेश दिया गया। इस दौरान कार्यक्रम का ब्र.कु. मोहिनी कबन, ब्र.कु. हिमांशु भाई, ब्र.कु. राजेश भाई एवं ब्र.कु. मनीष भाई ने सम्मोचित किया। इसके साथ ही सब-जॉन इंचार्ज ब्र.कु. सरस्वती दीदी द्वारा एक.एम. गोल्ड रेडियो, फस्टर न्यूज और लुधियाना लाइव मीडिया बेबसाईट के माध्यम से ‘वास्तविक शांति और समृद्धि’ विषय पर प्रकाश डाला गया।



ओकलाहोमा सिटी-यूएसए। इंटरनेशनल पीस डे के अवसर पर ब्रह्मकुमारीज द्वारा ‘एंड रेसिज्म-बिल्ड पीस’ विषय पर आयोजित इंटरफेश पीस कॉफ्रेन्स में ब्र.कु. बिंदु बहन, संयोजिका, ब्रह्मकुमारीज, ओकलाहोमा सिटी, विभिन्न धार्मिक प्रतिनिधि एवं सम्बोधित कार्य करने वाले लोग उपस्थित रहे। इस दौरान संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, न्यू यॉर्क का विडियो संदेश भी सभी को सुनाया गया।



भादरा-राज। ब्र.कु.चंद्रकान्ता को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए श्यामा नंद जी महाराज।



नई दिल्ली। भारत के नये उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से उनके ऑफीशियल रेसिडेंस पर मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ओआरसी गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. हुसैन बहन तथा अन्य।

जॉर्ज टाउन-गुयाना(साउथ अमेरिका)। हाई कमिशनर ऑफ इंडिया इन जॉर्ज टाउन एंड विवेकानंद कल्चरल सेंटर के द्वारा महामारी गांधी के 153वें जन्म दिवस पर एवं लाल बहादुर शास्त्री के 118वें जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर समूह चित्र में गुयाना के प्रधानमंत्री रिटा. ब्रिगेडियर मार्क एंथनी फिलिप्स, एम.एस.एस., हाई कमिशनर ऑफ इंडिया टू गुयाना डॉ. के.जे. श्रीनिवास तथा महात्मा गांधी के रूप में अंकल लीजी के साथ ब्र.कु. किनारी बहन, ब्र.कु. नंदी बहन एवं ब्र.कु. सरोज बहन।

सोनीपत से 15-हरियाणा। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सुरेंद्र पवार, विधायक, विजेंद्र मलिक, मुनिसिपल काउंसलर, नेश जी, मुनिसिपल काउंसलर, ब्र.कु. प्रमोद बहन सहित लगभग 200 लोग मौजूद रहे।



साथी को साथ रखो तो साक्षी दृष्टा हो जायेंगे



ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग
प्रशिक्षिका

दृश्य अनेक आयेंगे दृश्य के प्रभाव में नहीं आओ। साधन-सुविधा के लगाव में, अटेचमेंट में आकर उसको यूज़ न करें। अगर है और यूज़ न करें तो भी ठीक नहीं। कहने का मतलब कोई भी साधन सुविधा की अधीनता न हो। क्योंकि यह हमें अंदर से बहुत परेशान और हलचल में ला सकती है। अगर किसी व्यक्ति के प्रति हमारा झुकाव है तो वो भी हमें कई तरह की तकलीफ दे सकता है। किसी साधन के प्रति अधीनता है या झुकाव है वही हमारे लिए पेपर बन जाएगा, इसलिए बाबा ने कहा है जिस व्यक्ति के प्रति आपने सोचा होगा कि यह व्यक्ति मुझे कभी धोखा नहीं दे सकता, यह व्यक्ति मरा अपना है। उस दिन आप देखेंगे कि वही व्यक्ति आपको धोखा देने के निमित्त बन सकता है। सबसे बड़ा पेपर आपके लिए वही बन सकता है क्योंकि यह कल्याणी दुनिया है। कलियुग की भी अति में यह दुनिया जा रही है। किसी इंसान के अंदर इन्हीं पॉवर नहीं है बाहर में जो वफादारी से संबंध निभा सके क्योंकि आज की दुनिया में हर इंसान इन्हाँ स्वार्थी हो गया है वह पहले खुद का सोचेगा उसके बाद दूसरे का सोचेगा। तो आप सोचेंगे कि यह व्यक्ति मुझे धोखा दे ही नहीं सकता लेकिन नहीं कोई भी कभी भी धोखा दे सकते हैं, स्वाभाविक है।

दूसरी बात साक्षी दृष्टा की स्थिति को क्रिएट करने के लिए बाबा ने कहा त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो जाओ। त्रिकालदर्शी स्टेज पर आ जाओ। तीनों कालों को अच्छी तरह से देखो-पास्ट, प्रेजेन्ट और फ्यूचर तीनों कालों को देखते हुए नॉलेजफुल होकर के वर्तमान में मुझे क्या करना है बाबा ने हर बात की समझ हमें दी है, विवेक दिया है, आध्यात्मिक प्रज्ञा हमें मिली है। तो उस आध्यात्मिक प्रज्ञा को यूज़ करते हुए उस सिचुएशन को पार करना है। इसीलिए त्रिकालदर्शीपने की स्थिति जिसकी है उसके अंदर निश्चय रहेगा कि ड्रामा का हर एक सीन

आनंद के लिए, ज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग, हमें सेफ रखेगा और दिल से निकलेगा जो हुआ वो अच्छा, जो हो रहा वो बहुत अच्छा, और जो भविष्य में होगा वो बहुत-बहुत अच्छा।

देख रहे हैं। इतनी बात याद रखें कि जीवन में जो कुछ भी होता है अगर आपने कुछ किया ही नहीं, तो होगा ही नहीं। अच्छा इस जन्म में नहीं किया है तो कोई जन्म में तो किया होगा जिसका फल अभी आकर के मिल रहा है। मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकता मेरे साथ ऐसा करना है बाबा ने हर बात की समझ हमें दी है, विवेक दिया है, आध्यात्मिक प्रज्ञा हमें मिली है। तो उस आध्यात्मिक प्रज्ञा को यूज़ करते हुए उस सिचुएशन को पार करना है। इसीलिए त्रिकालदर्शीपने की स्थिति जिसकी है उसके

कोई न कोई कल्याण समाया हुआ है। तो स्थिति जितनी निश्चिंत होगी उतना ही साक्षी दृष्टा बनना सहज हो जाएगा। अगर निश्चिंत नहीं इसका मतलब निश्चयबुद्धि नहीं हैं और निश्चयबुद्धि नहीं है तो सिर्फ वर्तमान को देख कर हमारे मन के अंदर कई प्रकार के संकल्पों का तूफान चलना शुरू हो जाता है। तो इसलिए बाबा कहते हैं नॉलेजफुल हो जाओ। बाबा ने जो नॉलेज हमें दी है उस नॉलेज को एप्लाई करो। बाबा ने नॉलेज सिर्फ सुनने के लिए थोड़े दी है, समझने के लिए थोड़े दी है उसका प्रयोग करने के लिए दी है। जब बाबा के दिए हुए ज्ञान की खाइंट का उपयोग करके देखेंगे, स्वमान में स्थित होकर देखेंगे, त्रिकालदर्शीपने की स्टेज में स्थित होकर उस दृश्य को देखेंगे तो उस समय आपके अंदर से दुआएं निकलेंगी हर एक आत्मा के प्रति। कभी कोई हलचल किएट नहीं हो सकती। कोई तूफान आ जाता है तो वह भी आपके लिए तोहफा बन जाता है। अगर आप त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर कुछ सुनते हैं, त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर कुछ समय नॉलेजफुल होकर नॉलेज पर एप्लाई करते हैं तो साक्षी दृष्टा बनना सहज हो जाता है। साक्षी दृष्टा बनना माना जो बाबा की शिक्षाएं, श्रीमत है उसको एप्लाई करना और एप्लाई करते हुए चलना इसको कहते हैं निश्चयबुद्धि होकर निश्चिंत हो जाना। कोई भी बाहर की हलचल मेरे अंदर की स्थिति को विचलित न करे। जो हुआ वह भी अच्छा, जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होने वाला है वह भी बहुत अच्छा।

तीसरी बात साक्षीपन की स्थिति में वही रह सकता है जिसने बाबा को अपना साथी बनाया। इसलिए बाबा कहते हैं साथी को साथ रखो तो साथी आपको हर बात के लिए सावधान करेगा, आपको हर बात में कल्याण का दृश्य दिखा देगा कि क्या कल्याण है। वो दिखाइ देने लगेगा और कुछ नहीं तो अनुभवी तो बनायेगा।



दिल्ली-आरके.पुरा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आईएचव्यू ऑफ एमओडी आर्मी टीपीटी यूनिट एससी न्यू दिल्ली में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ऑफिसर्स व जवानों के साथ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन व ब्र.कु. पूजा बहन।



जम्मू एंड कश्मीर। रणबीर सिंह पुरा क्षेत्र के इन्द्रेश्वर नगर में बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स 165 बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर राजवंत सिंह के नेतृत्व और विशिष्ट अधिकारीगण एवं करीब 100 बीएसएफ जवानों की उपस्थिति में ब्र.कु. राजीव द्वारा 'मेरा जम्मू व्यसन मुक्त जम्मू' अभियान के अंतर्गत 'तनाव प्रबंधन' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस मौके पर ब्र.कु.मीणा बहन व अन्य भाई-बहनों उपस्थित रहे एवं वृक्षारोपण भी किया।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkvv.org

सदस्यता शुल्क: भारत- वार्षिक- 240 रुपये, तीन वर्ष- 720 रुपये, अजीवन- 6000 रुपये
Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO.: - 30826907041, IFSC - CODE - SBIN010638
BRANCH- Prajapati Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkvv.org
OR
WhatsApp, Telegram No.: 9414172087



SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



Merchant Name : RERF Om Shanti Media
vpa : 09000r10076184@barodampay
UPI  **PAYTM**  **BHIM**  **BharatPe** 



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

जरा सोचें...

निरन्तरता... देह और आत्मा के अन्तर को मिटायेगी

मुझे बार-बार अपने आप को देहभान से डिटैच करते रहना है, महसूस करना है। बाबा सुनाते, समझाते हैं हमारा काम क्या है? समझना, अभ्यास करना, अनुभव करना। सारा दिन में वो फँलों करना है। रोज़ की मुरली रोज़ मुझे अभ्यास में लानी है। भक्ति में तो सत्य ज्ञान नहीं था, हर एक ने अपनी मते सुनाई और अनेक मते हो गई। बाबा कहते हैं ना एक सत्य मत मैं ही देता हूँ अब हमें कुछ हूँड़ना नहीं है। हमें सत्य मिल चुका है। अब हमें क्या करना है? अभ्यास में और आचरण में लाना है। जो बाबा कहते हैं उसे मुझे महसूस करना है। जो एहसास करेगा वो चेंज तुरंत करेगा। परिवर्तन करने में समय क्यों लगता है? भगवान कहे और हम कर क्यों नहीं पा रहे हैं? क्योंकि हम एहसास नहीं कर पा रहे हैं। कौन आया है? और वो क्या कह रहा है? आप मुझे समझ में आ रहा है तो समझ में आने का मतलब क्या है? स्वरूप बनना, जीवन में समान बनना। जैसे हम हॉल में बैठे हैं। पता है हॉल अलग और हम अलग हैं। इस सोफा, कुर्सी पर बैठे, पता है ना सोफा अलग है, मैं अलग हूँ। हमने वस्त्र पहने हैं समझ रहे हैं ना वस्त्र अलग हैं मैं अलग हूँ। इसी तरह गहराई से समझना है कि शरीर अलग है, मैं आत्मा अलग हूँ। शरीर तत्व है, मिट्टी है, मैं आत्मा लाइट हूँ, माइट हूँ। जीवन में सारी भौतिकता और भोग की उत्पत्ति इस शरीर के भान से ही हुई। खुद को देह समझा, इसलिए खाने में,

पीने में, नहाने में, सोने में इन चीजों में बुद्धि लगी है। फिर शरीर के संबंध, वैभव, पदार्थ, प्रवृत्ति। अब बाबा ने हमें महसूस कराया, अब खुद में स्थित होना है। खुद को ऊँच बनाना है। खुद को शुद्ध बनाना है। तो आत्म स्मृति का अभ्यास, मुरली में बाबा कहते हैं मैं मुख द्वारा बोल रहा हूँ, तुम कान द्वारा सुन रहे हो। हमें ये प्रैक्टिस करनी होगी। तीसरा अभ्यास लक्ष्य रखो,

करत करत अभ्यास के, जड़ति होत सुजान, रसरी आवत-जात तें, सिल पर परत निशान। ये दोहा भल मवित का है पर हमें जो करना है, बाबा जो हमसे वाहते हैं, ये बारम्बार अभ्यास से ही सम्भव होगा। बस, उमंग के साथ करना है, अभ्यास करने लग जाना है बाकी तो परछाई की तरह परिणाम होगा ही।

मात्र से देहीअभिमानी नहीं बन जायेगी। हमें प्रैक्टिस करनी होगी। हमें बार-बार खुद को डिटैच करना होगा।

मुरली से पता चलता है ना कि ब्रह्म बाबा ने कितना अभ्यास किया। बाबा की जीवन कहानी में भी पढ़ते हैं। बाबा लिखते थे, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करते थे, यशोदा आत्मा, बाबा की धर्म पत्नी का नाम यशोदा था ना। बाबा लिख-लिखकर पक्का करते थे। अनेक जन्मों से देह दृष्टि का अभ्यास रहा है। अब ये पाठ पक्का हो गया। भल पवित्र रहते हैं तो भी देह संबंध का भान तो रहता है ना! देह संबंध के अधिकार से व्यवहार करते हैं। बाबा कहते हैं ना कि वो रग जाती

अटेंशन रखना है मुझे हर कर्म आत्म स्वर्धम में स्थित होकर करना है। आत्मा का धर्म कौन-सा? हमारा स्वर्धम कौन-सा?

शांति और पवित्रता। पता है ना मुझ आत्मा के मूल धर्म कौन-से है? शांति, सुख, आनंद, प्रेम, पवित्रता, ज्ञान और शक्ति। मुझे हर कर्म शांति से करना है। प्यार से, ज्ञान स्वरूप बनकर करना है, शुद्धि से करना है। तो आत्म अभिमानी स्थिति बने। ये तो अभ्यास है। और जीवन भर के अभ्यास से ही स्थिति बनती है। ये साधारण शरीर छिप जाए, मेरा ज्योति स्वरूप प्रत्यक्ष हो। मेरा स्वरूप कौन-सा है? ज्योति स्वरूप आत्मा है। ये स्थूल हड्डी-मांस का शरीर गायब हो जाए और

मेरा ये ज्योति स्वरूप प्रत्यक्ष हो जाए।

आपने देखा होगा रात के अंधेरे में ट्रैक्टर करते हैं, दूर से मोटर आती है, क्या दिखाई देता है? लाइट दिखाई देती है। उनके फोकस ही इतने पॉवरफुल होते हैं कि दूर से लाइट दिखाई देती है। मोटर गयब हो जाती है। हमारा भी ये फोकस इतना पॉवरफुल हो कि लाइट दिखाई दे, ये छिप जाये। मझे इतनी निरंतर आत्म स्मृति रहे। मैं प्रकाश बिंदु, प्रकाश के घेरे मैं। हर कर्मन्दियों से आत्म-अभिमानिता का तेज दिखाई दे। देखो, नाम रूप तो ये ही हैं और अंत तक ये ही रहेगा। ये थोड़े ही बदलेगा, बदलना क्या है? आत्म स्थिति बदले। बाबा कहते हैं ना आप में बाप दिखाई दे। तो चेहरा तो ये ही रहेगा पर मेरी स्थिति, स्मृति, वृत्ति बाप समान बने, वो दिखाई दे। चेहरा तो वही साधारण है पर अन्दर में खुशी है। ऐसा चेहरा कोई देखेगा तो पूछेगा ना कि क्या बात है? तो चेंज क्या हुआ? अन्दर खुशी।

अगर हमारे अन्दर चिंता, टेंशन, परेशानी है तो कहते हैं ना कि क्या बात है? टेशन में लग रहे हो। तो अन्दर की स्थिति, वृत्ति, चेहरे द्वारा दिखाई देती है ना! तो जितना हम आत्मअभिमानी स्थिति बनायेंगे, जितना बाबा याद रहेगा तो हमारे चेहरे से क्या दिखाई देगा! वो चीजें दिखाई देंगी जो अन्दर होंगी। ऐसी स्थिति हमें बनानी है। ऐसी स्थिति हमारी बनी रहे तब हम कहाँ भी होंगे चाहे परिवार, चाहे भीड़ के बीच, लैंकिन हम अलग ही दिखाई पड़ेंगे और देखने वाले कहेंगे ये योगी-तपस्वी आत्मा हैं।



फुलवरिया ढाका-पूर्वी चंपारण(बिहार)। भाजपा विधायक पवन जायसवाल के पिता की सृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में विधायक को ईश्वरीय सौगात भेट करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन।



डलास-यूएसए। इंटरनेशनल पीस डे पर पुलिस स्टेशन में सभी पुलिसकर्मियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. रंजन बहन व अन्य।



सेक्रेटेनेटो-कैलिफोर्निया(यूएसए)। विश्व प्रसिद्ध क्रॉकर आर्ट यूजियम, सेक्रेटेनो में सामूहिक चेतना जगाने एवं शांति प्रकट करने के उद्देश्य के साथ 41वा यूनाइटेड नेशन्स इंटरनेशनल डे ऑफ पीस मनाया गया। इस मौके पर कार्यक्रम के अन्य सीकर्स के साथ उपस्थित हैं ब्र.कु. हंसा बहन।



अयोध्या-उ.प्र। आई.पी.एस. विकास कुमार वैद्य का सम्मान करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन व ब्र.कु. उषा बहन।



दिल्ली-बवाना। दीपावली के कार्यक्रम में एसएचओ राकेश यादव को ईश्वरीय सौगात भेट करते हुए ब्र.कु. चौंद्रिका बहन। साथ हैं ब्र.कु. रोहताश भाई।



बिहार-पटना(बिहार)। मोरल डेवलपमेंट पब्लिक स्कूल में आध्यात्मिक ज्ञान एवं ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुजाता बहन तथा अन्य।



लालदिवोस्तोक-रायगढ़। रशिया में ब्रह्मकुमारीज द्वारा ईश्वरीय सेवाओं के 33 वर्ष पूर्ण हुए। इसी के तहत रशिया के फार ईस्टर्न कैपिटल लालदिवोस्तोक में राजयोगी ब्र.कु. सुधा दीदी, सीनियर राजयोगी टीचर, ट्रैटी एंड को-इन्वार्ज ऑफ सर्विस इन रशिया एंड नेबरिंग कंटरीज के प्रथम बार आगमन एवं दस दिवसीय विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गये। इसी के अंतर्गत लालदिवोस्तोक में भारतीय प्रतिनिधियों के लिए एक फ्रेंडली गेट-ट्रॉगेदर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कौंसल जनरल ऑफ ईंडिया इन लालदिवोस्तोक साई मुरली तथा कौंसलेट जनरल ऑफ ईंडिया के सदस्य अपने परिवार सहित शामिल हुए। इस दौरान ब्र.कु. सुधा दीदी ने कौंसल जनरल को योग को लोकप्रिय बनाने एवं चरित्र की व्यक्तिगत गरिमा में उनकी गतिविधियों के लिए 'डायमण्ड ऑफ बेनेवोलेंस डिप्लोमा ऑफ बिल्क रिकॉर्ड्स' अनिमेष कुमार दत्ता, बैंक ऑफ बड़ौदा को खजानी मंजू सिन्हा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हर्षा बहन एवं देवांगन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तृष्णा बहन।



हजारीबाग-झारखण्ड। दीपावली महोस्तव पर सर्जाई गई चैतन्य झाँकी का दीप प्रज्ञलित कर उद्घाटन करते हुए बैंक ऑफ ईंडिया के मुख्य शाखा की महाप्रबंध श्रीमति पूर्ण लैंक ऑफ ईंडिया के रामनगर बांच के प्रबंधक अध्यक्ष कुमार गुप्ता, सेट बैंक ऑफ ईंडिया के एसियोडी अफिसर अनिमेष कुमार दत्ता, बैंक ऑफ बड़ौदा को खजानी मंजू सिन्हा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हर्षा बहन एवं देवांगन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तृष्णा बहन।

आज हम पता गोभी या बंद गोभी के खाने के बारे में बताएंगे। यह लगभग सभी घरों में बनाई जाने वाली सब्जी है। पता गोभी लाल व हरे रंग की ज्यादा देखने को मिलती है। पता गोभी से सब्जी, सलाद, चाउमीन, सूप आदि पौष्टिक व्यंजन बनाए जाते हैं।

सर्दी के मौसम में पता गोभी की आवक ज्यादा रहती है। इसमें कैलोरी और सल्फर नामक मिनरल्स पाए जाते हैं।

ब्रोकली, स्प्राउट, फूल गोभी, पता गोभी यह सभी सब्जियां एक ही परिवार की सदस्य हैं। आज हम आपको पता गोभी के फायदे व नुकसानों के बारे में बतायेंगे...

पता गोभी में पाए जाने वाले पोषक तत्व

पता गोभी में पोटेशियम, आयरन, विटामिन के, विटामिन बी 1, विटामिन बी 6, विटामिन सी, विटामिन ई, बीटा कैरोटीन, सल्फर, क्लोरीन, मैग्नीज, फास्फोरस, जिंक, कैल्शियम, फाइबर, फोलेट और कार्बोहाइड्रेट आदि पोषक तत्व पाए जाते हैं।

पता गोभी खाने के फायदे

1. बालों के लिए फायदे

पता गोभी को सलाद या सब्जी के तौर पर भी खा सकते हैं। जिससे बालों की समस्या तुरंत समाप्त होती है। जैसे ही बालों का झड़ना, रुक्सी की समस्या, दो मुहे बाल आदि समस्याओं में पता गोभी बहुत गुणकारी है। पता गोभी का पेस्ट बनाने के लिए सबसे पहले पता गोभी को बरीक काट कर अच्छे से पीस लें फिर इसमें मुल्तानी मिट्टी मिक्स कर लें। फिर बालों पर

लगाएं। इसका प्रयोग आप हफ्ते में कम से कम 2 बार जरूर करें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में बालों में फर्क दिखाई देने लगेगा।

2. हृदयों को मजबूत बनाए

पता गोभी में दूध के जैसा कैल्शियम होता है, जो हृदयों को मजबूत बनाने में सहायक है। हृदयों में दर्द होने पर पता

तत्व पाए जाते हैं। जिस प्रकार से हमारा शरीर कई प्रकार के रोगों से लड़ने की क्षमता रखता है।

4. वजन को कम करे पता गोभी

पता गोभी खाने से वजन को कम किया जा सकता है। आप पता गोभी का रस या फिर जूस बनाकर पी सकते हैं। पता गोभी

ही पता गोभी उम्र के प्रभाव को भी कम करती है।

6. आँखों को बनाए स्वस्थ

पता गोभी का अगर नियमित मात्रा में सेवन किया जाए तो बॉडी में बिटा कैरोटिन का लेवल बढ़ जाता है, जिससे आँखें स्वस्थ और साफ रहती हैं। पता गोभी में विटामिन

पता गोभी को अपने भोजन में जरूर शामिल करें।

8. कब्ज से राहत

पता गोभी एक रेशेदार सब्जी है। इसमें फाइबर और ग्लूकोसाइनोलेट्स भरपूर मात्रा में होने के कारण शरीर में पानी की मात्रा बनाए रखता है। इसमें पौजूट फाइबर मल को त्यागने में काफी मदद करता है। और कब्ज से राहत मिलती है। इसके अलावा पता गोभी में एंथोसायनिन तत्व पाया जाता है। जो पाचन किया को ठीक बनाए रखता है।

पता गोभी खाने के नुकसान

पता गोभी खाने में जितनी फायदेमंद होती है उतनी ही है हमारी सेहत के लिए हानिकारक होती है। क्योंकि किसी भी चीज की अति कमी भी अच्छी नहीं होती, चाहे वो कितनी भी फायदेमंद क्यों न हो। तो आज हम आपको पता गोभी के नुकसानों के बारे में भी बताएंगे...

1. पता गोभी खाने से शरीर में आयोडिन की कमी और थायराइड की समस्या भी हो सकती है।

2. जिन लोगों को पता गोभी खाने से एलर्जी होती है, वे पता गोभी का सेवन न करें।

3. पता गोभी खाने से पेट फूलना और गैस की परेशानी भी उत्पन्न हो सकती है।

4. पता गोभी में पाए जाने वाला कैरोटिन आँखों की रोशनी तेज करता है।

5. त्वचा के लिए लाभदायक

श्रेष्ठ स्थिति से ही होगा साक्षात्कार

ज्यादातर हमारे सामने सरे दिन में जो बातें आती हैं वो अधिकतर सेम ही होती हैं। इधर कुछ कर दिया, इधर का कुछ सुन लिया। वहाँ का कुछ पता चल गया यह नॉर्मल बातें ही सारा दिन चल रही हैं। जो बड़ी-बड़ी बातें होती हैं उनमें हम बहुत स्थिर रहते हैं। अगर हम सब अपने जीवन काल में देखें जब हमारे जीवन में बड़ी-बड़ी बातें आए तो किसी ने शरीर छोड़ा, कुछ ऐसा बड़ा हुआ तो हमारे सकल्प, हमारी स्थिति बहुत पांजिटिव रहती है, उस समय बहुत स्टेबल रहती है। क्यों रहती है, क्योंकि हम हर रोज़ मुरली में सुनते हैं अगर किसी ने शरीर छोड़ा तो ऐसा सोचना है और वह थोट हमारे अंदर आ जाता है।

अगर कुछ पता चला कि देश में या विश्व में कुछ हुआ है तो ऐसा सोचना है। क्योंकि मालूम है यह होना है लेकिन जो छोटी-छोटी बातें आती हैं उसमें हम गलत सोचते हैं, क्योंकि मुरली में बाबा ने यह नहीं बोला अगर वह बहन ने ऐसा किया तो तुमको ऐसा सोचना है। यहाँ तक कि जब हम मधुबन जाते हैं, बाबा मिलन करते हैं इतना पॉवरफुल एक्सपीरियंस होता है, स्वयं भगवान के सामने हम मिलकर आते हैं, शक्तियों से भर जाते हैं। बाहर आते हैं देखते हैं हमारी चप्पल ही नहीं मिलती है। अब सोचो, करके क्या आ रहे होते हैं और बाहर आकर परिस्थिति कौन-सी होती है। तो चप्पल अगर नहीं मिलती है तो कई बार वाय(क्यों) हो जाते हैं बाहर। यह



ब्र.कृ. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

एक रियलाइजेशन है कि क्यों चप्पल नहीं मिली और कभी-कभी तो भाई-बहनें तो बाहर जो दूसरी चप्पल पड़ी होती है वही उठाकर पहन कर चले जाते थे, लेकिन मेरी किसी ने ले ली और मैं किसी और की लेकर जा रहा हूँ। हम चले जाते हैं हमें अवेयर नहीं है कि हमने क्या किया! क्या भरकर आए थे, क्या सुन कर आए थे, क्या बनकर आए थे और बाहर आते ही क्या बन गए! हमें यह अटेंशन देना है कि बाप समान सिफ़ ज्ञान मुरली सुनने-सुनाने समय, योग करने के समय नहीं हैं, क्योंकि बाबा ने बोला हुआ है कि अंत समय आपका साक्षात्कार होगा सबको और एक मुरली में बाबा ने कहा साधारण कर्म करते

हुए साक्षात्कार होगा और उस मुरली में बाबा ने कहा माता घर में पोछा लगा रही होंगी और उसके घर के लोगों को साक्षात्कार हो जाएगा कि हमारे घर में तो कोई देवी रहती हैं। अब जो साक्षात्कार होगा वह चित्र का नहीं होगा, मतलब जो शुरू वाले साक्षात्कार थे वह चित्र के साक्षात्कार थे। उनको सतयुग दिखाई देता था, श्रीकृष्ण दिखाई देता था, सतयुगी देवी-देवता दिखाई देते थे तो ये तो चित्र का साक्षात्कार है, क्योंकि उस समय ज्ञान नहीं था। जब ज्ञान नहीं था, स्थिति नहीं थी, पुरुषार्थ नहीं था तो चित्र का साक्षात्कार हुआ एंड में कौन-सा साक्षात्कार होगा? आपकी स्थिति का साक्षात्कार होगा। वह चित्र का साक्षात्कार था अब चरित्र का साक्षात्कार होगा।

तो वो माता पोछा लगा रही होंगी लेकिन उसका हर संकल्प मुरली का संकल्प होगा। उसकी स्थिति अव्यक्त मुरली की स्थिति होगी। वह बाप समान स्थिति में होंगी क्योंकि उसके संकल्प सिफ़ वही होंगे। उसके वायब्रेशन से उसके घर के लोगों को साक्षात्कार तो होना ही है। वो रूप साधारण होगा, डेस साधारण होंगी, कर्म साधारण होगा लेकिन स्थिति बहुत श्रेष्ठ होंगी। वायब्रेशन बहुत ऊंचे होंगे। उनको पता पड़ेगा कि कोई साधारण व्यक्ति नहीं है हमारे घर में। यह तो फरिशत है, लेकिन ये तभी होगा जब हमारा हर संकल्प, हर कर्म, हमारा व्यवहार बाप समान होगा।



कोटा जंक्शन-राज। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को दीपावली की शुभकामनाएं देने के पश्चात् भाई दूज का तिलक लगाते हुए ब्र.कृ. प्रीति बहन।



सोनीपत से 15-हरियाणा। हरियाणा सरकार एवं सोनीपत जिला प्रबंधक द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण हेतु आयोजित वार्षिक कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज को भी स्टॉल प्रदान किया। जिसमें ब्रह्माकुमारीज द्वारा सभी किसान एवं कृषि अधिकारियों को शाश्वत यौगिक खेती की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में डीसी ललित सिवाच को ब्र.कृ. प्रमोद बहन व ब्र.कृ. सुनीता बहन ने ईश्वरीय सौगात भेंट की। इस दौरान एग्रीकल्चर विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. अनिल सहरावत, डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर ऑफिसर नवीन हुड्डा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



कोरोपुट-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए भक्तबंधु जनार्दन दलेह, ओएस(एस), सब-कलेक्टर एवं सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट, कोरोपुट, श्रीमति मंजुला रातड, ज्वाइट सेक्टरी, ब्लूटी वैलफेयर एसोसिएशन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कृ. स्वर्णा बहन तथा अन्य।



हजारीबाग-बड़ा अखाड़ा(झारखण्ड)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा गोपाल्यमी के अवसर पर गौशाला में 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' लगाई गई, जिसमें जिला कलेक्टर नैन्सी सहाय, एसपी मनोज रतन चौधे, अनुमंडल पदाधिकारी विद्या भूषण कुमार, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कृ. दृष्टि बहन तथा अन्य भाई बहनें मौजूद रहे।



गया-सिविल लाइन(बिहार)। गोपाल्यमी पर आयोजित 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डीएम डॉ. त्यागराजन एसएम, एसडीएओ इंद्रवीर कुमार, समाजसेवी शिवकैलाश डालमिया उड़े मुना डालमिया, चम्बर के पूर्व अध्यक्ष बिपेंद्र अग्रवाल, सीएओ अनुज कुमार तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कृ. शीला दीदी। कार्यक्रम में अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

साल बीते, क्या सीखे

- ब्र.कृ. उर्वशी बहन, नई दिल्ली

हैप्पी न्यू ईयर करते-करते, हैप्पी ओल्ड ईयर होने आया। वर्ष दौरान वया हुआ, वया हमारे किए संकल्प सिद्ध हुए। अच्छा कहाँ कमी रह गई, बीते वर्ष से हमने क्या सीख ली! तो समझ आया कि हर साल यूँ ही वर्ष बीतते गए पर कई बार हमने किए संकल्प को पूरा करने का सोचा भी लेकिन फिर हार्ट के ग्राफ की तरह ही दिखाई पड़े। पर इस बार हमने सीख लिया कि मुझे आगे बढ़ना है... इस उमंग-उत्साह के साथ जिंदगी को सार्थक करते हुए सफलता के शिखर तक पहुंचना है। अब न रुकना है, न थकना है। बस! संकल्प को साकार करना है और सफल होना है।

हम हर से बदल सकते हैं और ये ज्ञानमृत का पान करने वाले हमें यहाँ हमारी प्रजा है। वहाँ हमला करने वाले हथियार हैं- बंदक, तोप और यहाँ हमला करने वाले हथियार हैं- व्यर्थ व नकारात्मक संकल्प क्योंकि यहीं तो हमें मार गिराते हैं। एक सैनिक तब तक नहीं हारता जब तक वो स्वयं से न हार माने चाहे फिर सामने से हमला कितना ही भयंकर क्यों न हो ठीक ऐसे ही यहाँ भी एक आत्मा तब तक नहीं हारती जब तक वो स्वयं से न हार मान ले। जैसे वहाँ के सैनिक की प्रतिदिन ट्रेनिंग होती है और साथ ही साथ उनके भोजन का खाल हर बक्त रखना होता है। अब सबल आता है कि हमारी ट्रेनिंग और भोजन क्या

है? आइए जानते हैं, देखिये मन का भोजन हमारे संकल्प, बुद्धि का भोजन है ज्ञान। हमारे मन का कार्य है सोचना, इसको हम रोक नहीं सकते परंतु हम इसको दिशा दे सकते हैं। इसकी दिशा

न किसी को अपने कल की कल्पना थी और न ही अपने परिवार की, परंतु आज हम देखते हो सब कुछ फिर से सुधरने लगा है। जो जिंदगी अपनी पटरी से उत्तर चुकी थी वो आज पुनः समय रूपी इंजन लगाकर अपनी पटरी पर पहुंच रही है। कोरोना हमें हराकर, एक कोने में बिठाने नहीं आया था ये तो हम सभी को हिम्मत और विश्वास के पंख देने आया था कि समय कितना भी बदले परंतु आप ये दो पंख कभी मत खोना। कहते हैं किसी के वर्तमान को देख उसके भविष्य की कल्पना मत करना क्योंकि भविष्य में इतनी ताकत है कि वो कोयले की खान को हीरे में बदल सकता है। तो क्या हमारा जीवन नहीं बदल सकता! देखिये मेरा खुद का अनुभव ये कहता है कि समस्या आती ही जाने के लिए है परंतु हम ही उसे सदाकाल का समझ कर हिम्मत खो देते हैं। पहले भी न जाने कितनी महामारियां आईं संसार में, तो क्या सभी सदाकाल के लिए रहीं? नहीं ना! वो 2, 4, 6 वर्षों में खत्म हो ही गयीं ना! सभी यही सिखाकर गयी कि समय भी अपना समय आने पर बदल ही जाता है। कुछ भी स्थाई नहीं है जीवन में।

जो भी हमारे जीवन में होता है सब कल्याणकारी है, ये लाइन भी सदैव याद रखिये। और हाँ जिंदगी कथी विद्यालय के अध्यापक की तरह सीधे-सीधे नहीं पढ़ाती, यह सदैव पहले परिस्थिति का उदाहरण देती तत्प्रश्नात् समझाती है ताकि आपको सदैव काल के लिए इसके पढ़ाये हुए पाठ याद रख सकें। अब आगे कभी परिस्थिति आये तो यही स्मृति रखना कि ये जिंदगी अब फिर से नया पाठ, नये उदाहरण के साथ समझा रही है और विशाल बुद्धि बन, धैर्यता से समझने का प्रयास करना और फिर एक दिन आप फतह का झाँड़ा निश्चित रूप से लहरायें, ये हमारा विश्वास है।

परमात्मा ऊर्जा



शक्तियों को सभी अनुभव करना है। बापदादा इसका भी त्याग कर यह भाष्य पाण्डवों और शक्तियों को वरदान में देते हैं। इसलिए शक्तियों की पूजा बहुत होती है। अभी से ही शक्तियों को भक्तों ने पुकारना शुरू कर दिया है। आवाज सुनना आता है? जितना आगे चलते जायेंगे उतना ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई मूर्ति के आगे भक्त लोग धूप जलाते हैं व गुणगान करते हैं, वह प्रैक्टिकल खुशबू अनुभव करेंगे और उनकी पुकार ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि समुख पुकार। जैसे दूरबीन द्वारा दूर का दृश्य कितना समीप आ जाता है। वैसे ही दिव्य स्थिति दूरबीन का कार्य करेगी। यही शक्तियों की स्मृति की सिद्धि होगी और इस अन्तिम सिद्धि को प्राप्त होने के कारण शक्तियों के भक्त शक्तियों द्वारा रिद्धि-सिद्धि की इच्छा रखते हैं। जब सिद्धि देखेंगे तब तो संस्कार भरेंगे ना! तो ऐसा अपना स्मृति की सिद्धि का स्वरूप समझे आता है? जैसे सन शोज़ फादर है, वैसे ही रिटर्न में फादर का शो करते हैं? बापदादा प्रत्यक्ष रूप में यह पार्ट नहीं देखते, लेकिन शक्तियों और पाण्डवों का यह पार्ट है। तो इतना वफादार और

फरमानबरदार बनना है जो एक सेकण्ड भी, एक संकल्प भी फरमान के सिवाय न चले। इसको कहते हैं फरमानबरदार। और वफादार किसको कहते हैं? सम्पूर्ण वफादार वे कहलायेंगे जिसको संकल्प में भी व स्वज्ञ में भी सिवाय बाप के और बाप के कर्तव्य व बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे, ऐसे को सम्पूर्ण वफादार कहते हैं।

एक बाप दूसरा न कोई - दूसरी कोई बात स्वज्ञ में, स्मृति में दिखाई न दे। उसको कहते हैं सम्पूर्ण वफादार। ऐसे फरमानबरदार की प्रैक्टिकल चलन में परख क्या होगी? सच्चाई और सफाई। संकल्प तक सच्चाई और सफाई चाहिए, न सिफ़्र वाणी तक। अपने आप को देखना है कि कहाँ तक वफादार और फरमानबरदार बने हैं? अगर एक संग सदा बुद्धि की लगन है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता। बुद्धि की लगन कम होने का कारण अनेक प्रकार के संग के आकर्षण अपने तरफ खींच लेते हैं। तो और संग तोड़, एक संग जोड़ - यह पहला-पहला वायदा है। उस वायदे को निभाना, इसको ही सम्पूर्ण वफादार कहा जाता है।



फिजी-ओशिआनिया लबासा टाउन में आध्यात्मिक ज्ञान देकर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराने एवं गशन वितरण के पश्चात् उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शांता दीदी, वीणा भट्टाचार्य, मेयर आफ द पालियामेंट औफ फिजी, असिस्टेंट मिनिस्टर फॉर बुमेन, चिल्ड्रेन एंड पोवर्टी एल्लेविएशन तथा अन्य स्थानीय महिला नेतायें।

कथा सरिता

किसी गाँव में रहने वाला एक छोटा लड़का अपने दोस्तों के साथ गंगा नदी के पार मेला देखने गया। शाम को वापिस लौटते समय जब सभी दोस्त

ठहर गया। उसने अपने दोस्तों से कहा कि वह और थोड़ी देर मेला देखेगा। वह नहीं चाहता था कि उसे अपने दोस्तों से नाव का किराया लेना पड़े। उसका स्वाभिमान उसे इसकी

ओङ्गल हो गई तब लड़के ने अपने कपड़े उतारकर उन्हें सर पर लपेट लिया और नदी में उतर गया। उस समय नदी उफान पर थी। बड़े से बड़े तैराक भी आधे मील चौड़े पाट को पार करने की हिम्मत नहीं कर सकता था। पास खड़े मल्लाहों ने भी लड़के को रोकने की कोशिश की।

उस लड़के ने किसी की न सुनी और किसी भी खतरे की परवाह न करते हुए वह नदी में तैरने लगा। पानी का बहाव तेज़ था और नदी भी काफी गहरी थी। रास्ते में एक नाव वाले ने उसे अपनी नाव में सवार होने के लिए कहा लेकिन वह लड़का रुका नहीं, तैरता गया। कुछ देर बाद वह सकुशल दूसरी ओर पहुँच गया।

उस लड़के का नाम था 'लालबहादुर शास्त्री'। वे वाकई में बहुत बहादुर थे और उनके बचपन के प्रेरणादायक किस्से काफी प्रचलित हैं।

सीख : ऐसे प्रेरणादायक जीवन से हमें सीख लेनी चाहिए, ताकि उसे हम अपने जीवन में भी उतार सकें और भविष्य उज्ज्वल बना सकें।

बाद आयेगी।

आज हमारी समस्याओं की एक वजह ये भी है कि हम स्वतंत्र रूप से नहीं सोचते एवं अपना निर्णय दूसरे व्यक्तियों द्वारा लिए गए निर्णयों के आधार पर ले लेते हैं। भीड़ हमेशा उस



नदी किनारे पहुँचे तो लड़के ने नाव के किराये के लिए जब में हाथ डाला। जब में एक पाई भी नहीं थी। लड़का वहीं

अनुमति नहीं दे रहा था। उसके दोस्त नाव में बैठकर नदी पार चले गए। जब उनकी नाव आँखों से

एक दिन की बात है। मैं रेलवे स्टेशन पर खड़ा था एवं ट्रेन का इंतजार कर रहा था। मैं जिस ट्रेन का इंतजार कर रहा था उसमें आक्षण का कोई सिस्टम नहीं था। प्लेटफॉर्म पर इतनी भीड़ थी कि यह बात स्पष्ट थी कि जगह उसी को मिलेगी जो भीड़ को पछाड़ कर सबसे पहले ट्रेन में चढ़ेगा। तभी घोषणा के बाद सभी यात्री आराम से बैठ गए एवं कुछ व्यक्ति नींद की मीठी-मीठी झपकियां ले रहे थे।

कुछ ही मिनट के बाद एक व्यक्ति उठकर पश्चिम की तरफ आगे बढ़ा जहाँ से ट्रेन आने वाली थी। तभी कुसी पर बैठे एक व्यक्ति ने अपने पास बैठे मित्र से कहा, देखो वह व्यक्ति आगे गया है, शायद ट्रेन आ गयी जल्दी चलो नहीं तो जगह नहीं मिलेगी। ऐसा कहकर वह दोनों व्यक्ति आगे की तरफ भागे जहाँ पर ट्रेन आकर रुकती है। उन दोनों व्यक्तियों को भागते हुए देख, आराम से बैठी भीड़ में हलचल हुई तथा भीड़ भी उठकर आगे की तरफ चली गयी जहाँ ट्रेन आकर रुकती है। भीड़ को देखकर मैं भी आगे बढ़ गया। आगे जाकर पता चला कि ट्रेन नहीं आई है। सबसे पहले जो व्यक्ति आगे की तरफ गया था वो तो ऐसे ही ठहर रहा था।

उस दिन मुझे ये बात समझ में आई

तब मैं भी भीड़ के साथ-साथ आगे भागा और मैंने एक पल के लिए भी इस बात पर गैर नहीं किया कि अभी-अभी रेलवे ने यह घोषण की ट्रेन 40 मिनट

अपने निर्णय स्वयं ले



रोहतक-हरियाणा दिपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. एस.एस. रंगा, निदेशक, ए.आई.आर. रेडियो रोहतक, मेयर मनमोहन गोयल, अमित जी, एच.ओ.डी. पत्रकारिता एवं दूरसंचार, कृतिका वालिया, स्वास्थ्य मंत्रालय क्षेत्रीय समन्वयक पश्चिमी भारत, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन तथा अन्य भाई-बहनों उपस्थित रहे।

आत्मदीप जलाकर चित्त की नकारात्मक वृत्तियों को शांत करें : दादी

ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय पांडव भवन, शांतिवन, ज्ञानसरोवर सहित सभी परिसरों में ज्ञान एवं दीपकों के रोशनी के साथ मनाया गया दीपावली महोत्सव

दीपावली के शुभ अवसर पर रोशनी से जगमगाया संथान का हृषीकेश

सुंदर गीत, संगीत, नृत्य से सुशोभित रही दीपोत्सव की महफिल मंच पर दादी एवं वरिष्ठ भाई-बहनों द्वारा केक काटकर एवं कैंडल लाइटिंग कर मनाई गई दीपावली

पांडव भवन-माउण्ट आबू। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी ने कहा कि मन के तिमिर को समाप्त करने के लिए आत्मदीप को निरंतर प्रज्ञलित करने की ज़रूरत है। दृढ़ संकल्प के साथ हम अपनी दिनचर्या के हर कार्य में अध्यात्म को जोड़ने का सूत्र सीख लें तो निश्चित रूप से जीवन में अविनाशी शांति परछाई की तरह सदा साथ रहेगी। यह उद्गार उन्होंने संगठन के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय पांडव भवन में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि त्योहारों के वास्तविक रहस्य को समझने से आत्मदीप जलाकर चित्त की नकारात्मक वृत्तियों को शांत किया जा सकता है। मनुष्य चौले में मौजूद चेतना की शक्तियों को जागृत करने के

लिए आत्मज्ञान से स्वयं को भरपूर करना होगा। संगठन की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी ने कहा कि बिना किसी अर्थ में बीती बातों का चिंतन करने से ही जीवन में



तनावजन्य परिस्थितियां पैदा होती हैं। स्वयं की आत्मिक शक्तियों पर ध्यान केन्द्रित करने से मन का अंधकार समाप्त हो जाता है। मन की अदम्य शक्तियां जागृत होने से जिन्दगी का हार पल बेहतर तरीके से उपयोग किया जा सकता है।

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुनी दीदी ने कहा कि दीपों से प्रज्ञलित दीपावली का त्योहार केवल धनोपार्जन के सम्पन्नता स्वरूप नहीं बल्कि आत्मावलोकन करते हुए आत्मदर्शन का दिवस है, जो जीवन में भलाई व बुराई का भेद बताता है। संगठन की संयुक्त मुख्य प्रशासिका ज्ञान सरोवर निदेशिका ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि अज्ञान अंधकार से जीवन में अनेक वाली समस्याओं के समाधान के लिए ज्ञान प्रकाश हमेशा प्रज्ञलित रहना चाहिए।



उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, मीडिया प्रभाग अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा भाई, लोबल अस्पताल निदेशक डॉ. प्रताप मिढ़ा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. शीलू दीदी, मलेशिया से आई राजयोगिनी ब्र.कु. मीरा दीदी, जर्मनी से आई राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी, समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. अवतार भाई आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उमंग-उत्साह के साथ बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

'मास्टरिंग योर माइंड' व्याख्यान का आयोजन

राजयोगिनी ब्र.कु.आशा दीदी ने दिये मन को शांत और दिघर रखने के टिप्प



एक ही तरीका है और वह है ईश्वर, सर्वोच्च शक्ति से जुड़ना। दीदी ने कहा कि आज हम अपने अंतरिक दोषों के प्रभाव में हैं और ईश्वरीय शक्तियों द्वारा हम अच्छे गुणों को प्राप्त करके ही इन दोषों से लड़ सकते हैं। कुमारी लावण्या ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत कर सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. नीलिमा दीदी ने मानव कल्याण की दिशा में ब्रह्माकुमारी संगठन के उद्देश्यों एवं किए गए कार्यों को साझा किया। लुधियाना उप-क्षेत्र प्रभारी ब्र.कु. सरस्वती दीदी ने सभी उपस्थित लोगों को धन्यवाद दिया एवं शुभकामनाएं दीं। इस कार्यक्रम में जज के.के. करीर, पुलिस कमिशनर डॉ. कोशेतूब शर्मा, पूर्व मेयर गोलबरिया जी, प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रिंसिपल, दुर्गा माता मंदिर प्रधान, पिरामिड मेडिटेशन के ट्रस्टीज़, रामपाल आश्रम के सदस्य, काउंसलर्स तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

लुधियाना-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विश्व शांति सदन, गांव झांडे, लुधियाना में 'मास्टरिंग योर माइंड' विषय पर आयोजित प्रेरणादायक व्याख्यान में ओ.आर.सी. गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.आशा दीदी ने कहा कि मन को दमन नहीं करना बल्कि सुमन बनाना है। इस तेजी से भागती दुनिया में मौन की शक्ति प्राप्त करने का

नवा रायपुर में दीपावली मिलन समारोह



नवा रायपुर-छ.ग। ब्रह्माकुमारीज के शांति शिखर रिट्रीट सेंटर में दीपावली मिलन समारोह बड़े ही हॉलोल्लास से मनाया गया। इस मौके पर गृह सचिव अरुण देव गौतम ने दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि एक-एक दीप हमारे संकल्पों का प्रतीक है। मन में छाए हुए अज्ञान अंधकार को दूर करने से ही समाज के अंधकार को दूर किया जा सकता है। संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि बाहर के अंधकार को

से जगाकर पावन बना रहे हैं। दीपावली का त्योहार परमात्मा के इन्हीं कर्मों की यादगार है। कार्यक्रम में रायपुर के बाल कलाकारों (कुमारियों) ने मनभाव नृत्य और मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी को भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर स्थानीय गायिका कु.शारदा नाथ ने दीपावली की बधाई देते हुए सुंदर गीत गया। इस मौके पर ब्र.कु. सविता दीदी सहित बड़ी संख्या में अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

तनाव को अलविदा करके सुख-शांति के लिए अपनायें राजयोगी जीवन शैली

टॉपी-ह्यू रोड(जारखण्ड) मेडिटेशन अनुभूति से मनुष्य को अनेक प्रकार की शक्तियों प्राप्त होती हैं जिनसे सहज ही तनाव से मुक्ति पाई जा सकती है। इन शक्तियों के द्वारा मनुष्य रोग, शोक, चिंता व सर्व परेशनियों को जीत लेता है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज के चौधीरी बगान, हरमू रोड सेवकेन्द्र में 'तनाव मुक्ति मेडिटेशन अनुभूति' राजयोग कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् रोंची के पूर्व मेयर उदय प्रताप सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सहनशीलता ही हर समस्या का समाधान है। तनाव को अलविदा करके परिवार की दरारें दूर कर दें, तो सुखी परिवार बन जाए। अशांति का कारण ईश्वरानुभूति का अभाव है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान में ईश्वर का सानिध्य मिलने से अकेलापन दूर होता है तथा सर्वशक्तिमान से



कनेक्शन जुट जाने से राजयोगी जीवन का मार्ग प्रस्तुत होता है। ग्रामीण बैंक के सहायक महाप्रबंधक अभय जी ने कहा कि अनेक बीमारियों का कारण तनाव होता है। आज के

भौमारियाँ दूर हो जाती हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान के मेडिटेशन सेंटर में दीपावली मिलन समारोह बड़े ही हॉलोल्लास से मनाया गया। व्यवसायी व समाजसेवी मृत्युंजय जी ने कहा कि व्यर्थ चिंतन से दुःख, क्षमा और तनाव पैदा होता है। मानव यदि सकीर्ण विचारों से ऊपर उठकर दूसरों के कार्य व्यवहार को साक्षी दृष्टि से देखे तो किसी से गिलाशिकता न रह। शांति, चैन, सुख की खोज में भटकते आदमी को परमात्मा स्मृति की छठाया ही सही रास्ता प्रदान करेगी। सेवकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निर्मला दीदी ने कहा कि दुखों को ज्ञान के सागर में डाल अपने हृदय को हल्का रखना चाहिए। मानसिक स्थिरता व एकाग्रता हेतु राजयोगी जीवन शैली लाभदायक है जो ब्रह्माकुमारीज सेवकेन्द्र पर प्रतिदिन सिखाई

ईश्वरानुभूति का अगाव ही अशांति का कारण : पूर्व नेयर

शुभ कर्मों के बीज जगत ने बोने का यही समय : ब्र.कु. निर्मला दीदी

जाती है। दीदी ने कहा कि महान योगी जंगल में नहीं जाते, संसार में रहते हैं। लेकिन सांसारिकता उनके मन में नहीं रहती। कर्मयोग की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि संसार को सत्य शिक्षा तो केवल परमात्मा सदा शिव भगवान देते हैं और केवल वही इस सृष्टि परिवर्तन के संधिकाल में शुभ कर्म करने की विधि बताते हैं। शुभ कर्मों के बीज जगत में बोने का यही समय है। कार्यक्रम में समाजसेवी सुबोध मिश्रा तथा बड़ी संख्या में अन्य लोग उपस्थित रहे।

जब कभी हम आध्यात्मिकता में अपने आपको डालते हैं तो कई बार एक छोटा-सा संकल्प ज़रूर चलता है कि कौन-सी ऐसी कमी है जो इतने समय से, यहाँ रहने के बावजूद भी बीच-बीच में थोड़ा-सा नव्हर्सनेस फील होती है या मन पूरी तरह से उसके साथ नहीं जुड़ता है। कभी मन करता है कि कुछ और करें। तो इस दुनिया की एक सबसे बड़ी खास बात है, जिस पर हमको बहुत ज़्यादा सोचने और मनन चिंतन करने की ज़रूरत है। भाग्य मिलना बड़ी बात नहीं है, उस भाग्य को रिंजर्व करना बहुत बड़ी बात है। रिंजर्व का मतलब है उसकी देखभाल करना, उसको बार-बार संजोना, संवारना और उसका ध्यान रखना। इसको आध्यात्मिकता की शक्ति के रूप में अगर देखें तो जब कभी भी हम, कोई भी चीज़ गहराई से जान जाते हैं तो उसके पीछे हमको पड़ना पड़ता है। मतलब उसके और डेझ(गहराई) में जायें। क्योंकि जैसे पैसा मिला तो उस पैसे को जब हम जितना ज़्यादा से ज़्यादा इच्वेस्ट करते हैं, उतना ही वो बढ़ता जाता है। वैसे ही इस आध्यात्मिक ज्ञान में भी जितना ज़्यादा से ज़्यादा हम उस चीज़ को अलग-अलग कार्यों में लगाते हैं तो वृद्धि होती है। एक हो गयी एक तरफ की बात। ये वाली बात एक तरफ की बात है, लेकिन इसमें दूसरी बात भी शामिल है कि उसका अभ्यास भी हमको करना ज़रूरी है बीच-बीच में।

कौन-सा अभ्यास? जो हमको याद दिलाये, बार-बार याद दिलाये कि ये चीज़ आप हैं, और इस चीज़ के लिए आप यहाँ पर आये हैं। तो जैसे हमारा लक्ष्य

रहते हुए हमारे अंदर वो वाले भाव ही नहीं पनपते दूसरे वाले तो हमको लगता है कि सब ठीक चल रहा है। लेकिन जैसे ही आप किसी ऐसे स्थान पर जायेंगे वहाँ

बार-बार लाने के लिए बार-बार मुझे
अपने आपको याद दिलाना पड़ेगा कि
नहीं-नहीं मैं इस आध्यात्मिक शक्ति से
अपने आपको संवार सकता हूँ। तो ये

है। तो बार-
बार
आपको
इसको
बाहर
जाकर व
जब आप
बाहर जाते
हैं, किसी से



Dr. Anuj Bhaidilali



भाग्य को अभ्यास से बढ़ाओ

परमात्मा ने हमें दिया कि आप परमात्मा के बच्चे हैं। परमात्मिक शक्ति आपके साथ है, और परमात्मा हमेशा आपको साथ दे रहा है। ये सारी बातें मुझे बार-बार याद दिलाने से, ये शक्ति बढ़ जाती है। और ये शक्ति बढ़ती है जितनी, उतनी ज्यादा हमको खुशी होती है। लेकिन जब थोड़ी भी खुशी गायब तो इसका मतलब अभ्यास को हमने कम कर दिया। और ये जैसे हम किसी माहौल में रहते हैं, इस बात को बहुत ध्यान से समझेंगे कि जब हम किसी ऐसे माहौल में रहते हैं जहाँ प्यारिचुअलिटी का ही बोल-बाला है। जहाँ निरन्तर वैसे ही लोग रह रहे हैं। तो ऐसे स्थानों पर

पर अगर किसी छोटी से छोटी बात में अगर आपको परेशानी अनुभव होनी शुरू हो गयी, तो आप समझ लीजिए कहाँ न कहाँ आपके अभ्यास में कमी आ गयी है। क्योंकि शायद आपने अभ्यास छोड़

बड़ा ही अच्छा अनुभव है इस चीज़ का कि जितना अधिक से अधिक हमने इस चीज़ पर ध्यान दिया है, उतना वो टाइम पर काम आता है। नहीं तो जो हम निरन्तर ऐसे बातावरण में रह रहे हैं ना जहाँ सब

उस समय आपका बात कहने का जो दम होगा, जो ताकत होगी उसमें बहुत फर्क होगा। इसलिए अभ्यास की निरन्तर आवश्यकता है। और उससे परमात्मा का भाग्य जो हमको दिया गया है वो और बढ़ता चला जाता है।

बड़े ही लम्बे समय की ये दस्तान है।
क्योंकि एक दिन में तो ये होता नहीं है।
तो ये जितना-जितना इसकी गहराई में
हम जाते जा रहे हैं हम सभी, उतना
हमको पता चल रहा है कि सिर्फ परमात्मा
को जान जाना, आत्मा को जान जाना,
भाग्य को जान जाना ही बड़ी बात नहीं
है, लेकिन उसको अभ्यास के साथ जोड़
देना और इतना गहराई से जोड़ना कि
आपको हमेशा याद रहे, कि नहीं, मुझे
अभ्यास करना है। छोटी बच्चे की तरह
निरंतर मुझे अभ्यास करना है। मुझे
अभ्यास करना। मुझे अभ्यास करना।
इससे आपके जीवन में फिर से वही
निखार आ जायेगा जो शुरूआत में था।

भाग्य मिलना बड़ी बात नहीं है, उस भाग्य को
रिंगर्व करना बहुत बड़ी बात है। रिंगर्व का
मतलब है उसकी देखभाल करना, उसको बार-बार
संजोना, संवारना और उसका ध्यान रखना।

प्रश्न : मेरा नाम पुनीत है। मैं शर्मीले नेवर का हूँ। मैं इंट्रोवर्ट हूँ इसीलिए ऑफिस में मेरा सब मज़ाक उड़ाते हैं और इसके कारण मैं कई नौकरी छोड़ दुका हूँ। कृपया बतायें कि ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : नौकरी छोड़ने की तो कोई बात नहीं। जब वो मज़ाक उड़ायें तो आप भी मुस्कुरा दें। इसका अच्छा तरीका ये है। जितना आप उनकी बातों से चिढ़ेंगे उतना वो आपको चिड़ायेंगे। प्रैक्टिकल तरीका इसको लाइटली लें और मुस्कुराकर आगे बढ़ें और अपना काम चालू रखें। तो वो समझ जायेंगे कि हमारी बातों से इसको कोई फर्क नहीं पड़ता, इसको छोड़ दो। ये साइकोलॉजी का प्रयोग आपको अवश्य करना चाहिए। लेकिन आपकी जो शर्मीली नेचर है, आप जो किसी से मिलते-जुलते नहीं इसके लिए आपको कुछ प्रैक्टिस अवश्य कर लेनी चाहिए। इसकी जो प्रैक्टिस है हमारे ईश्वरीय ज्ञान में वो है स्वमान की प्रैक्टिस। स्वमान से हम खुल जाते हैं। हमें अपनी विशेषताओं का आभास होता है, हमें अपनी शक्तियों का आभास होता है। वो जागृत होने लगती हैं। और ये जो शर्मीली नेचर है वो समाप्त होने लगती है। हमारे यहाँ सेवाओं के बहुत प्रोग्राम चलते हैं वहाँ बहुत एग्ज़ीविशन भी लगते हैं तो वहाँ जाकर आप उनमें हिस्सा लेने लगें और चित्रों पर जब आप समझायेंगे तो आपमें जो शर्मीलापन है वो थोड़ा खुलने लगेगा। थोड़ा-सा लोगों से आपस में घुलने-मिलने लगें। तो आप निर्भय भी बन जायेंगे और पाँवरफुल भी बन जायेंगे। मुस्कुराना भी सीख लेंगे और दूसरों से बात करने में हिचक भी नहीं होगी।

हमारा परमपिता हमें बहुत कुछ देने के लिए तत्पर रहता है। सारा दिन नहीं, सारा दिन तो हम भी अपने में बिज़ी हैं। उसकी ओर देखने का कम मौका मिलता है। सबरे तो हम भी उसकी ओर देखते हैं। और वो भी बहुत सारे वरदान, बहुत सारी सिद्धियां, बहुत सारी शक्तियां हमें देने के लिए तत्पर रहता है। उसका फायदा हमें मिलेगा। अगर आपका योग न लगे तो आप ईश्वरीय महावाक्यों का अध्ययन कर लें या फिर उठते ही शांत में 108 बार लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। लिखते-लिखते आपके ब्रेन को बहुत एनर्जी जायेगी और दो-चार दिन में आपको फील होने लगेगा कि मन एकाग्र होने लगा है। आपही

समाधान है। रोज़ सबेरे राजयोग का अभ्यास कर लें, शिव बाबा से कनेक्शन जोड़ें, कभी फ़िल करें मैं परमधाम में उसकी किरणों के नीचे हूँ, उसकी सारी शक्तियां, किरणें मुझे में समा रही हैं। कभी अभ्यास करें कि मैं आत्मा भूकुटि में हूँ, मैं पीसफुल हूँ, मैं इस देह से न्यारी हूँ, बहुत गुड़ फॉलिंग इस डिटेचर्मेंट की होनी चाहिए। ये देह अलग है और मैं आत्मा अलग हूँ, फिर आप अपनी पत्नी को इमर्ज करेंगे, देखेंगे ये आत्मा है, फिर उसको संकल्प देंगे तुम तो भगवान की संतान हो, तुम्हारा पिता तो शांति का सागर है। तुम भी शांत स्वरूप हो, शांत हो जाओ। पाँच बारी ये संकल्प दे दें कि तुम तो शांत स्वरूप हो, शांत हो जाओ... इसका इफेक्ट अच्छा होगा और ये काम रोज़ सेम टाइम पर करना है। कम से कम 21 दिन तक। लेकिन अगर केस ऐसा बड़ा है, नहीं ठीक हो रहा तो आगे भी करना पड़ेगा। इससे क्या होगा जब वो सोके उठेंगी उसके मन में वही विचार आयेंगे जो यहाँ से भेजे गए थे। फिर उनको भी संकल्प आयेगा कि मैं तो क्रोध करती हूँ ये तो अच्छा नहीं है, हम रियलाइज़ करा सकते हैं, दूसरे की पाँकर ऑफ रियलाइज़ेशन को बढ़ा सकते हैं कि ये तो बिल्कुल अच्छा नहीं है। इसका मेरे बच्चों पर क्या असर होगा। वो कहीं क्रोधित होकर लड़ाई-झगड़ा करने लगें, मारामारी करके घर में आयें, कोर्ट केस हो जाये। कुछ और बुरा हो जाये इसलिए मुझे शांत रहना चाहिए। तो हर रोज़ जब इस तरह से शांति के बायब्रेशन उस आत्मा को जायेंगे तो इसका परिणाम बहुत पॉजिटिव होगा।

मन की बातें



जयेन्द्र बृक्ष सर्व भाई

प्रश्न : मैं रजनी चंबा से हूँ। मैं कुछ समय से ब्रह्माकुमारीज
विद्यालय में जा रही हूँ। योग में मेरी रुचि है तोकिन योग
मेरा लगता नहीं, और एकाग्रता भी नहीं है। कृपया बतायें
कैसे योग करें?

योग्युक्त हो जायेगा। योग करने को मन करेगा। जब आप ऐसा लिखेंगी तो आपको एक सुख का आभास होने लगेगा। और बहुत अच्छी फीलिंग आपको योग में मदद करेगी। आप रोज़ ईश्वरीय महावाक्य सुनें क्योंकि उससे सुन्दर विचार हमें मिलते हैं। कई तो ऐसे मिलते हैं जौ हमारी बुद्धि की गांठों को खोल दे उसको सुनने से आपको सुख भी मिलेगा, आपको आनंद भी आयेगा। पाँच-पाँच, दस-दस मिनट इस तरह धीरे-धीरे प्रैक्टिस करें। दस-दस मिनट तीन बार या पाँच बार करें। इस तरह आप प्रैक्टिस करें तो सबकछ सहज होता चला जायेगा।

उत्तर : कोई व्यक्ति ऐसा होता है बचपन से ही उसका स्वभाव बहुत अच्छा, उसकी नेचर बहुत अच्छी, खुश रहने की नेचर, सरल स्वभाव। एकाग्रता बहुत अच्छी है। ऐसे लोग तो राजयोग के मार्ग पर आते ही तुरंत सफल होने लगते हैं। लेकिन ऐसे बहुत हैं जो अपने साथ लाये हैं निर्णेटिविटी। जिनका बचपन से लेकर और युवा काल भुग्य संग में बीत गया है, उन्होंने मन को बहुत भटका दिया है। कुछ गलत काम भी कर लिए हैं। कुछ लोग तो हमारे पास ऐसे आते हैं जिन्होंने जीवनभर शराब पी है। एकाग्रता बिल्कुल नहीं होती। शराबी का बेन एकाग्र नहीं हो सकता। वो तो विचलित होता रहेगा। आपको पहला ध्यान तो ये देना है कि 4 बजे सूर्योदय से बहुत पहले उठना है। क्योंकि सवेरे का प्रकृति का जो सौन्दर्य है वो सुन्दर होता है। और दूसरा परमात्म शक्तियां हमें बहुत मिलती हैं। यानी

प्रश्न : मेरा नाम सतीश साहू है। मेरी पत्नी बहुत क्रोधी स्वभाव की है। यदि उनकी बात न मानी जाये तो गुस्से में बिल्कुल अन्कंट्रोल हो जाती है। घर के सामान तोड़ने-फोड़ने लगती हैं, अपशब्द बोलती हैं, बच्चों को भी मारने लगती हैं और कभी-कभी मुझे और मेरी माँ को भी मार देती हैं। तो आए दिन क्लेश से अच्छा क्या मुझे तलाक पर विचार करना चाहिए?

उत्तर : हर व्यक्ति क्रोध करने के बाद पश्चात्ताप की अग्नि में जलता है और अपने किए क्रोध पर पछताता है। क्रोध तो एक बहुत बुरी चीज़ है इससे हमें बचना ही चाहिए। अगर आप राजयोग का अभ्यास करते हैं, अगर नहीं तो किसी भी सेवकेन्द्र पर जाकर सीख लें और उस आत्मा को रोज़ 15 मिनट बहुत अच्छे शान्ति के व्यायामेशन दें। राजयोग में इन सबका बहुत अच्छा

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका





जिम्मेदारियों को बोझ न समझ अपना भाग्य समझें

जिसका जिम्मेदार स्वयं भगवान हो, वे परेशान कैसे हो सकते हैं? जिम्मेदारी तो हर व्यक्ति के पास कुछ ना कुछ होती ही है। रोज ही कई जिम्मेदारियों का बहन(निभाना) मनुष्य करता है। एक टीचर की भी जिम्मेदारी होती है कि वो बच्चों को ठीक से पढ़ाये। स्टूडेंट्स की भी जिम्मेदारी होती है कि वह ठीक से पढ़े। माता-पिता की जिम्मेदारी अपने बच्चों के प्रति। कोई बड़ा काम आपको दे दिया गया, उसकी जिम्मेदारी आपके ऊपर है। आपको बच्चों की शादियां करनी हैं उनकी जिम्मेदारी, पढ़ाना-लिखाना या कहीं ज्यादा खर्च करना है उनकी जिम्मेदारियां हैं। हर एक की अपनी क्या-क्या जिम्मेदारियां हैं और क्या-क्या कर्तव्य हैं इसको मनुष्य को अच्छी तरह पहचान लेना चाहिए। कईयों की जिम्मेदारी उन्हें बोझिल कर देती है और कईयों की जिम्मेदारियां उन्हें आगे बढ़ा देती हैं, बहुत कुछ सिखा देती हैं, शक्तिशाली बना देती हैं। इसलिए जिम्मेदारियां सभालना, ये एक बहुत बड़ी क्वालिटी है। कई लोग कहा करते हैं कि भई हम काम तो करेंगे, पर जिम्मेदारी नहीं लेंगे वो साधारण आत्माएं मानी जायेंगी। जिम्मेदारी लेने वाला व्यक्ति नेतृत्व करेगा और वो नेता बन जायेगा। और जिम्मेदारी में सफल होना ये भी अपने हाथ में है। उसमें हमारा स्वभाव बहुत स्थौर हो, अभिमान ना हो। हमें कार्य करने की बहुत तत्परता हो, हमें केयरलेसनेस ना हो, तो हमारी टीम भी ऐसी हो जायेगी और तब जिम्मेदारियां, हमें सुख देने वाली बन जायेंगी। हमारा नाम रोशन करने वाली बन जायेगी। परंतु जिम्मेदारियों को बोझ न बनने दें।

बाबा कहा करते थे, बाप बच्चों को जिम्मेदारियों देते हैं लेकिन जो बच्चे अपनी जिम्मेदारियां बाप को अर्पित करके ट्रस्टी होकर जिम्मेदारियों को पूर्ण करते हैं वो सदा सफल होते हैं। भगवान ने तो हमें बड़ी-बड़ी जिम्मेदारी दे दी। विश्व को बदलना है। संसार को भगवान का संदेश देना है। लाखों-करोड़ों

लोगों के जीवन को सुंदर बनाना है। मनुष्य को देवत्व की ओर ले चलना है। और तुम्हारी अपने लिए बहुत जिम्मेदारियां हैं। मनुष्य की अपने लिये भी जिम्मेदारियां होती हैं, परिवार के लिये भी, समाज के लिये भी और विश्व के लिये भी। जब जॉब करते हैं तो जो कार्य सौंपे जाते हैं तो उन्हें पूर्ण करने की जिम्मेदारी होती है। आपको चार घंटे में एक कार्य पूर्ण करना है ये आपकी जिम्मेदारी है। अब आपकी मनोस्थिति कैसी होती है, आपका मन तुरंत तेज दौड़ने लगता है या कंट्रोल में रहता है? आप नर्वस हो जाते हैं या धैर्यवत् रहते हैं? आपकी विवेक शक्ति स्टेबल रहकर ठीक-ठीक काम करती है या जल्दी-बाजी में आकर आप कुछ का कुछ

आपको चार घंटे में एक कार्य पूर्ण करना है ये आपकी जिम्मेदारी है। अब आपकी मनोस्थिति कैसी होती है, आपका मन तुरंत तेज दौड़ने लगता है या कंट्रोल में रहता है जाते हैं या धैर्यवत् रहते हैं?

निर्णय लेने लगते हैं और खेल बिगड़ जाता है। जिम्मेदारी निभाते हुए आपके साथ एक टीम भी है। उसे आप एक्टिव रखते हैं या लेज़ी, उन पर क्रोध करते हैं या प्यार का साम्राज्य। आपका अभिमान आँड़े आ रहा है या आपकी सद्भावनाएं, सब जिम्मेदारियों में मुख्य रूप से पार्ट प्ले करती हैं। किसी के अच्छे रिजल्ट, तो किसी के बुरे रिजल्ट लेकिन जिम्मेदारी मिलते ही परेशान हो जाना, जिम्मेदारी मिलते ही बहुत नर्वस हो जाना, बोल बिगड़ जाना, टेंशन में आ जाना, परेशानी फील करने लगना, भारी फील करने लग जाना, ये चीजें व्यर्थ संकल्पों को बहुत बढ़ा देती हैं।

एन्जॉय करें अपनी जिम्मेदारियों को, याद रखें स्वयं सर्वशक्तिवान मेरा साथी है, मैं तो निमित्त हूँ, करनहार हूँ। करावनहार तो शिवबाबा बैठा है ना। उसकी शक्ति से सारा कार्य सहज ही पूर्ण हो जायेगा। तो जिम्मेदारियों को खेल समझकर, अपना श्रेष्ठ भाग्य समझकर, अपनी योग्यता समझकर

उसका आनंद लेंगे। अगर भगवान जिम्मेदारी देता है तो जिम्मेदारी को पूर्ण करने का बल भी प्रदान कर देता है। इसलिए हम बहुत-बहुत हल्के हो जायें। जितने हम हल्के होंगे, जिम्मेदारियां भी सहज पूर्ण हो जायेंगी। हम सफलता को प्राप्त होंगे, और अगर हमने अपने मन को भारी कर लिया, हम टेंशन में आ गये क्या होगा, ऐसे करूँ-वैसे करूँ, ये लोग साथ देंगे या नहीं देंगे। हम सफल ना हुए तो क्या हो जायेगा? यदि इस तरह का चिंतन चलने लगा तो जो जिम्मेदारी हमें मिली, जिसे हम निभा रहे हैं उसमें बाधाएं बहुत आयेंगी, और हमें हार-जीत, सफलता-असफलता का सामना भी करना पड़ सकता है। इसलिए भगवान हमारा साथी है। अपने में बहुत विश्वास रखते हुए हम करेंगे ही, हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा, ये ईश्वरीय नशा अपने साथ ले लें। यदि रखें कल्प-कल्प हमने इन जिम्मेदारियों को पूर्ण किया है। सफलता को प्राप्त किया है, विजय को प्राप्त किया है। अब भी सफलता हमारी ही होगी।

आज तक रिजल्ट देखा है कि जो बाबा को साथ लेकर चलते हैं। करन-करावनहार की स्मृति में रहकर कार्य करते हैं, अनेक साथी उनके बन जाते हैं। मैंने कई जगह देखा बड़ा मकान तो चालू कर दिया पर ऐसा कहाँ से आयेगा। सभी भाई-बहन कहते थे कि हो जायेगा बहन जी। फिर बहन जी को थोड़ा डर-सा रहता था कि पता नहीं कितना समय लगेगा? कहीं बीच में काम नहीं रुक जाये, लेकिन सभी ने हिम्मत बढ़ाई, उमंग-उत्साह बढ़ाया। पैसा आता गया, मकान बनता गया। समय से पहले एक सुंदर सेवाकेंद्र बनकर तैयार हो गया। तो हमें स्वयं में विश्वास, बाबा की शक्तियों में विश्वास, अपने ईश्वरीय परिवार में विश्वास रखकर हर जिम्मेदारी का वहन करना चाहिए। बस हमें ये सीधी लेना है कि हमें अपना संगठन कैसे तैयार करना है, कैसे उसमें बल भरना है? हम ऐसा व्यवहार करें कि ना हमें व्यर्थ संकल्प चलें, ना जो हमारे साथी उनके व्यर्थ संकल्प चलें। ना हमें टेंशन रहे, ना उन्हें टेंशन रह। हम भी हल्के रहें और सबको भी हल्के करके आगे बढ़ायें। तो जिम्मेदारियां सचमुच हमें शक्तिशाली बनायेंगी, हमें अनुभवी बनायेंगी, हमारे विवेक को जगायेंगी। हमें व्यर्थ संकल्पों से मुक्त करेंगी।



कोलकाता-राय बगान(प.बंगाल)। ब्रह्माकुमारीज्ञ एवं यंग ब्लड क्लब के संयुक्त तत्वाधान में सात दिवालीय 'जीवत दुर्गा उत्सव' का आयोजन किया गया। यूनेस्को ने कोलकाता में इस कार्यक्रम को शहर के बीचो-बीच विजिट करने के लिए चुना। कार्यक्रम में यूनेस्को कल्चरल हेरीटेज टीम के चार प्रतिष्ठित सदस्य, विधायक विवेक गुप्ता तथा प. बंगाल सरकार के अन्य प्रतिनिधियों सहित अनेकों लोगों ने शिरकत की। इस दौरान ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. योगिनी बहन, ब्र.कु. प्रेरणा बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।



टिटलागढ़-ओडिशा। दीपावली के अवसर पर विधायक महोदया दुर्गनी साहू के हस्तों से दीप प्रज्वलित कराने के पश्चात् उन्हें प्रसाद देते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन।



दिल्ली-इंद्रपुरी। दीपावली के पावन पर्व पर आयोजित लक्ष्मी, गणेश व सरस्वती की चैतन्य झाँकी में उपस्थित हैं केंद्र सरकार के कृषि मंत्रालय के पूसा अनुसंधान से आये संजय भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बाला बहन तथा ब्र.कु. विजय बहन।



कोटा-वल्लभ नगर(राज.)। दीपावली के अवसर पर दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् जिला कलेक्टर ओ.पी. बुनकर को प्रसाद देते हुए ब्र.कु.ज्योति बहन।



मोकामा-बिहार। सेवाकेन्द्र में आने पर स्टेशन मास्टर कुमार उमेश संकर को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा बहन।



शिमला-पंथाधाटी(हिं.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज्ञ के ईश्वरीय कार्य में सदा तन-मन-धन से तत्पर, यज्ञ स्नेही, सहयोगी, सेवाधारी एवं ईश्वरीय नियमों का 15-20 वर्षों से पालन करने वाली 40 राजयोगी तपस्वी माताओं के लिए सम्मान समारोह का सेवाकेन्द्र पर आयोजन किया गया। इस अवसर पर ओम प्रकाश भाई, ब्र.कु. कमल बहन, हरियाणा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजनी बहन, बिलासपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता बहन, घुमारवीं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हरदीप बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।

परमात्मा द्वारा विश्व परिवर्तन के भगीरथ कार्य अर्थ एक साथ 23 राजयोगीनी ब्रह्माकुमारी बहनों का महासमर्पण

जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। जयपुर की सड़कों पर उस समय अध्यात्म की अनूठी धारा बह निकली जब जयपुर यूजियम सबज़ोन के वैशाली नगर सेवाकेन्ड्र की रुत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में सेवाकेन्ड्र द्वारा 16 बगियों पर सवार 23 युवा बाल ब्रह्माचारिणी बहनों का कारवां निकला। सैकड़ों की तादाद में लोगों ने जगह-जगह फूल बरसाकर उनका भव्य स्वागत किया। इस मनोरम दृश्य को देखने के लिए सड़कों पर लोग ठहर गए। सबसे पहले बगी में संस्थान की अंतिरिक्त मुख्य प्रशासिका तथा यूरोपियन सेवाकेन्ड्रों की निदेशिका राजयोगीनी ब्र.कु. जयंती दीदी सवार होकर उसका गौरव बढ़ा रही थीं। समारोह स्थल पर हजारों लोग इन बहनों के दर्शन के लिए उमड़ पड़े। इन बहनों का भव्य स्वागत सकार कर तथा श्रृंगारित कर मंच पर बिठाया गया।

इस अवसर पर संस्थान की अंतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगीनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि इन बेटियों ने यह जीवन अपनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि नारी समाज को बदलने की वीणा उठा सकती है। परमात्मा का ज्ञान और उनके तरफ अग्रसर कर जीवन को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। वे माता-पिता धन्य हैं जिन्होंने वैशिक समस्याओं के समाधान हेतु परमात्मा द्वारा परिवर्तन के कार्य में अपनी बेटियों को समर्पित किया है। ब्रह्माकुमारीज ब्रह्माकुमारीज सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. सुषमा बहन ने कहा कि समर्पण में 17 बेटियां राजस्थान की हैं। इन्हें 5 साल तक प्रशिक्षित कर पिछे इन्हें सेवा के लिए समर्पित किया जा रहा है। 5 बेटियां छत्तीसगढ़ से तथा 1 असम से हैं।

संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने कहा कि परमात्मा शिव माताओं-बहनों को आगे कर नई दुनिया का निर्माण कर रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज संस्थान नारी शक्ति का प्रबल उदाहरण है। यही बेटियां एक दिन समाज को बदलती हैं। कार्यक्रम में अहमदाबाद महादेवनगर की प्रभारी ब्र.कु. चंद्रिका बहन, इलाहाबाद से आर्या थार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. मनोरमा दीदी, जींद से आर्या ब्र.कु. विजय बहन समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर सभी समर्पित होने वाली कुमारियों के माता-पिता ने खुशी के आंसुओं से नम आँखों के साथ अपनी बेटियों को परमात्मा को साक्षी मानकर बृहद ईश्वरीय सेवा में समर्पित



कर्तव्यात् मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई ने बताया कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय 87 वर्षों से सेवा कर रहा है। संस्थान में बहनों का समर्पण 1936 से प्रारंभ हुआ। आज 50 हजार से भी अधिक बहनें 140 देशों में हजारों सेवाकेन्ड्रों में सेवा कर रही हैं। संस्थान के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने कहा था कि ख-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का कार्य बहनों द्वारा ही होगा। जो आज हम देख रहे हैं।

इंजीनियरिंग एवं बीटेक तक पढ़ी हुई बहनें बनी शिवप्रिया

सुनेहा बहन, बीटेक, एकता बहन, बीटेक, कल्पना बहन, मास्टर ऑफ साइंस, पूजा बहन, मार्ट्स इन विजुअल आर्ट्स गोल्ड मेडलिस्ट, पूजा बहन, बी कॉम, रिट्रॉ बहन, एमए, रेखा बहन, एमए, बीए, दीशा बहन, एमएससी, पिंकी बहन, बीकॉम, शैली बहन, इंजीनियर, सीमा बहन, एमए, सुनीता बहन, एमए, बीए, मोनिका बहन, ग्रेजुएट, दीपि बहन, ग्रेजुएट, हेमा बहन, 12वीं, रेणुका बहन, एमए, बीए, रीना बहन, बीकॉम, रुचि बहन, एमए, बीए व प्रियंका बहन, 8वीं।

संस्थान का भारत समेत दुनिया के 140 देशों में फैलाव

भारत सहित 140 देशों में इस संस्थान के 8 हजार से अधिक शाखाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्राचीन राजयोग की शिक्षा दी जा रही है। संस्थान में आज दस लाख परिवार नियमित रूप से राजयोग मेडिटेशन से लाभान्वित हो रहे हैं। संस्थान की स्थापना 1936-37 में संधि हैदराबाद में हुई और भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद ये संस्था 1951 में भारत में स्थानांतरित हुई। जिसका मुख्यालय मारंट अबू राजस्थान में है। इस संस्थान को यूनाइटेड नेशन्स में अपर स्टेट्स सदस्यता प्राप्त है। आध्यात्मिकता के जरिये भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर भारतीय सभ्यता को पुनः स्थापित करने के साथ-साथ विद्या दी जा रही है। संस्थान को अंतर्राष्ट्रीय पीस मेडल और पाँच राष्ट्रीय पीस मेडल से सम्मानित किया गया।

आध्यात्मिकता के जरिये मानवीय मूल्य स्थापित करने हेतु संस्थान द्वारा निरंतर कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। राजयोग मेडिटेशन के द्वारा ईश्वरीय मूल्यों को जीवन में उतारना और संसार में सुख, शांति और समृद्धि को स्थापित करना ही संस्थान का मुख्य उद्देश्य है। इसी को देखते हुए आज इस संस्थान में हजारों भाई-बहनें स्वैच्छिक व समर्पित रूप से कार्यरत हैं।

शांतिदूत बन विश्व में शांति की स्थापना का कार्य कर रहा संस्थान

अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष जसवीर सिंह ने कहा कि शिक्षा के अंदर पारंगत होने के बाद आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रतिक्रिया करने वाली और समाज को सुशीलित व सुर्खित करने का कार्य करने वाली बहनों ने शिवबाबा को अपना जीवन समर्पित करने का फैसला किया है, ये सोने पर सुवागा वाली बात है। मैं इन बहनों को और इनके माता-पिता को बहुत बधाई देता हूँ, साधुवाद देता हूँ। उन्होंने कहा कि सभी सरकारों के बाद दूतावास होते हैं, जिसी देश के 100 की संख्या में, किसी के 150, किसी के 200। लेकिन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के दूतावास देश और विदेशों में 9000 जगहों पर हैं। और इन दूतावासों के माध्यम से शांति का पैगाम, विकास का पैगाम, संस्कारों का पैगाम दिया जाता है। जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रोशन लाल रेन ने कहा कि मैं पहले समझता था कि इस तरह के गोमेट्री डिसिजन्स होते हैं, इमोशनल डिसिजन्स होते हैं, तो यथा आगे चलकर ये चलेंगे। लेकिन डिस्ट्राइब किया गया इनका बैंकग्राउंड, एकाडेमिक, सोशल, कल्याण, फैमिली, व्यालिफिकेशन वाइज़, तो मुझे लगता है कि ऐसी छात्राएं जब इस मिशन के साथ खुशी से जुड़ी हैं तो वो डिसिजन केवल इमोशनल इंस्टेटिनियस नहीं होता है, वो डिसिजन थोर थोर होता है। और जो डिसिजन थोर थोर होता है, वही जीवन में सफलता लाता है।



सिरसी रोड स्थित रणबंका मैरिज हॉल में हजारों लोगों की मौजूदगी में बहनें बनीं शिवप्रिया



सिरसी रोड स्थित रणबंका मैरिज हॉल में बीटेक एवं इंजीनियरिंग तक पढ़ी 23 राजयोगीनी बहनें बनीं शिव ब्र.कु. सुषमा बहन ने बताया कि यह पहली बार है कि जब एक साथ 23 बहनों का महासमर्पण हुआ। यह महासमर्पण एक तरह से ईश्वर के

साथ उनका स्वयंवर है। कार्यक्रम में शहर के गणमान्य नागरिकों सहित समर्पित होने वाली बहनों के माता-पिता, परिजन, रिश्तेदार तथा बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमारीज संस्थान से जुड़े भाई-बहनें मौजूद हैं।

समर्पित होने वाली कुमारियों ने कहा : परिवार की सहमति से किया समर्पण, वैशिक समस्याओं का अंत करने के लिए इसके अलावा दूसरा रास्ता नहीं

- प्रताप नगर निवासी एकता बहन ने बताया कि मैं 16 साल से इस संस्था से जुड़ा हूँ। 7 साल से सेवाएं दे रही हूँ। यह जीवन सर्वश्रेष्ठ है, गृहस्थ में समाजसेवा प्रायोरिटी में नहीं रह पाती है। अब हम ईश्वरीय ज्ञान, योग अभ्यास व गुणों से सभी की आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे।

- झोटवाडा निवासी पूजा शर्मा ने बताया कि मेरे दो मामा और मौसी इस संस्था से जुड़े हैं, ऐसे में मेरा भी बधान से ही लग और जुड़ा था।

- भरतपुर निवासी सुनेहा कुंतल ने बताया कि मैकेनिकल इंजीनियरिंग के बाद एनीमी में गरस्ता नहीं है। मेरी बहन लोगों की बहुतीय मार्ग अपनाने के बाद आपनी शिवयोगी एवं ब्रह्माकुमारीज शांतिवन-राज. से प्रकाशित।

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, - 307510

— See Latest News —